हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 2 मार्च 2025

9 खाटू श्याम ध्वजा यात्रा श्रद्धा, भक्ति और आस्था ...

10 ग्रामीण इलाकों में बिजली के खंभे उखड़े, फसलें बिछी

डॉ. एम. मोनिस
Consultant Emergency Medicine
आपातकालीन चिकित्सा विशेषज्ञ
MBBS,MEM(Emergency Medicine)
8+ Years Of Experience
आपातकालीन स्थिति में 24x7 इमरजेंसी मेडिसिन डॉक्टर उपलब्ध हैं।
हर आपात स्थिति में, आपके सबसे करीब!
डॉ. एम. मोनिस
किसी भी इमरजेंसी में तत्काल चिकित्सा सहायता | अचानक एलर्जी | सीने में दर्द या तेज धड़कन
सूजन या सांस लेने में दिक्कत | अत्यधिक कमजोरी, | चक्कर या बेहोशी महसूस होना
दवा, खाना या किसी अन्य कारण से रिएक्शन | तेज बुखार, शरीर में कंपकंपी या ठंड लगना
यदि आप भी इन समस्याओं से परेशान हैं, तो आज ही हमारे विशेषज्ञ से परामर्श करें
आयुष्मान योजना के तहत मुफ्त OPD व इलाज उपलब्ध!
एम्बुलेंस/आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क करें:
70 09 09 0924
MK Hospital
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध

खबर संक्षेप

सैनी धर्मशाला में सम्मान समारोह आज

भिवानी। नेहरू पार्क के सामने सैनी धर्मशाला में सैनी कल्याण परिषद द्वारा दो मार्च को 10 बजे रेनुबाला सैनी का सम्मान समारोह का आयोजन किया हैं। रेनुबाला सैनी गत दिवस भिवानी बार एसो. के हुए चुनाव में उपप्रधान निर्वाचित हुई हैं। संस्था के प्रधान भूप सैनी ने बताया कि सैनी कल्याण परिषद ने रेनूबाला सैनी के सम्मान समारोह में सर्वसमाज के लोगों को आमंत्रित किया है।

छात्र से साइबर ठगी करके ऐंठे ₹ 57100

तोशाम। तोशाम थाना क्षेत्र में साइबर ठगी का मामला सामने आया है। क्षेत्र के गांव बजीणा निवासी तथा बीए के छात्र रविंद्र ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 29 जनवरी 2025 को उसे इन्वेस्ट प्रॉफिट के नाम पर ठगा गया। पीड़ित के मुताबिक, ठगों ने पहले उसे निवेश के लिए प्रेरित किया और अलग-अलग किश्तों में कुल 57,100 रुपए की राशि ऐंठ ली। पीड़ित ने तोशाम साइबर थाना पुलिस से मामले की जांच कर अज्ञात आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

राष्ट्रीय लोक अदालत के लिए चार बेंचों का गठन

चरखी दादरी। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव संजीव काजला ने बताया कि प्राधिकरण द्वारा 8 मार्च को आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के लिए 4 बेंचों का गठन किया गया है। राष्ट्रीय लोक अदालत के लिए बेंच में प्रिजाइडिंग अधिकारी के रूप में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश जसबीर सिंह कुंडू, दूसरी बैंच में एसीजेएम मीनाक्षी यादव, तीसरी बैंच में जेएमआईसी धर्मपाल और चौथी बैंच में जेएमआईसी लक्ष्य गर्ग को प्रिजाइडिंग अधिकारी लगाया है।

देवी अहिल्याबाई होलकर में सम्मान समारोह कल

भिवानी। चौधरी बंसीलाल विवि के प्रेमनगर स्थित नए परिसर में कल दो मार्च रविवार को प्रातः 10:30 बजे कुलपति प्रोफेसर दीप्ति धर्माणी की अध्यक्षता एवं कुलसचिव डॉ. भावना शर्मा के मार्गदर्शन में देवी अहिल्याबाई होलकर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया है, जिसमें राज्यसभा सांसद किरण चौधरी बतौर मुख्यतिथि शिरकत करेंगी। डॉ. सुरेश मलिक ने बताया कि कार्यक्रम में बतौर विशिष्ट अतिथि भगत फूलसिंह महिला विवि की कुलपति प्रोफेसर सुदेश छिकारा तथा बतौर वक्ता राष्ट्रीय सेविका समिति की महासचिव अंजली जैन शिरकत करेंगी।

लोहारू, बवानीखेड़ा और सिवानी नपा का चुनाव आज, चुनावी सामग्री लेकर बूथों पर पहुंची पार्टियां

बवानी खेड़ा में 8919 पुरुष व 7944 महिलाएं कुल 16863 मतदाता करेंगे मतदान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा/सिवानी/लोहारू

लोहारू, बवानीखेड़ा व सिवानी नगरपालिका के चेयरमैन व पार्षदों के मतदान शुरू होने में महज कुछ ही घंटों का समय बचा है। तीनों जगहों पर चुनावी तैयारियां मुक्कमल हो चुकी है। मतदान कराने के लिए उक्त तीनों जगहों पर पोलिगं पार्टियां चुनावी सामग्री लेकर मतदान केंद्रों पर भी पहुंच गई। दूसरी तरफ शांतिपूर्वक तरीके से चुनाव कराए जाने को लेकर पुलिस प्रशासन ने भी अपनी तैयारी पूरी कर ली है। अप्रिय घटना से बचने के लिए पुलिस प्रशासन ने 15 जगहों पर नाकाबंदी की है तथा नौ टीमों का गठन किया है। जो कि चुनाव में बारीकी से नजर रखेंगे। इस दौरान पुलिस प्रशासन की टीमें मतदान केंद्रों का भी निरीक्षण करती रहेगी। दूसरी तरफ जिला उपायुक्त ने सभी अधिकारियों की मीटिंग बुलाकर चुनाव के दौरान आपस में तालमेल बनाए रखने के निर्देश दिए हैं। ताकि लोग आराम से अपने मतों का प्रयोग कर सके।

जानकारी के अनुसार जिन कर्मचारियों की चुनाव में ड्यूटी लगी है। वे कर्मचारी सुबह ही चुनावी सामग्री लेने के लिए पहुंच गए थे। चुनावी सामग्री लेने के बाद शाम चार बजे तक निर्धारित मतदान केंद्रों पर पहुंचे और रविवार को होने वाले चुनाव की तैयारियों में जुट गए। यही स्थिति लोहारू व सिवानी नपा चुनाव की रही। वहां पर भी पुलिस प्रशासन ने चुनाव कराए जाने के पुख्ता इंतजाम किए हुए है।

यहां-यहां होंगे वार्डवाइज चुनाव

बवानी खेड़ा कस्बे में 16863 मतदाता है। जो कि रविवार को बवानीखेड़ा के चेयरमैन का चुनाव करेंगे। जिसके लिए बवानीखेड़ा में ढुंढ़वा जोहड़ स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला में वार्ड 2, पीएम श्री राकवमावि में वार्ड 1, 3, 4, 11, राजकीय महिला महाविद्यालय में वार्ड 8, 9, रामॉसंवमावि में वार्ड 10 12, हुडडा स्थित राप्रापा में वार्ड 13, 14 ढ़ाणी यादव स्थित विद्यालय में वार्ड 15, 16, बिजली निगम के पास स्थित राजकीय प्रापा में 5, 6, 7 वार्डों के चुनाव के लिए तय किया गया है।

बवानीखेड़ा। चुनावी सामग्री की जांच करते कर्मचारी।

चेयरमैन के लिए उम्मीदवारों ने झोंकी ताकत

नपा चुनावों को लेकर जहां सभी चेयरमैन दावेदारों ने ताकत झोंकी हुई है और संतरी से लेकर मंत्री तक भी यहां अपने अपने उम्मीदवार के पक्ष में मतदान के लिए अपील के लिए आ चुके हैं। वहीं पार्षद भी किसी सूरत में पीछे नहीं हैं। शुक्रवार को विधायक कपूर वाल्मीकि के डमरू ने पूरे प्रदेश में तहलका मचाया जिसके बाद उन्हें बताना पड़ा कि किसी ने शरारत करके इसे क्लिप को सोशल मीडिया पर डाल दिया और उन्होंने भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान की अपील की।

जिला पुलिस के द्वारा निकाय चुनाव के दौरान 15 नाके व 09 पेट्रोलिंग पार्टी लगाई

पुलिस अधीक्षक ने नगर निकाय चुनावों को स्वतंत्र, निष्पक्ष व शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने के लिए जिले के सभी पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने चुनावी प्रक्रिया के दौरान कड़ी सतर्कता बरतने, कानून-व्यवस्था बनाए रखने तथा किसी भी प्रकार की गड़बड़ी पर तुरंत कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

पुलिस अधीक्षक ने सभी पुलिस अधिकारियों को संवेदनशील व अति-संवेदनशील मतदान केंद्रों पर विशेष निगरानी रखने, गश्त करने तथा असामाजिक तत्वों पर कड़ी नजर रखने के निर्देश दिए। साथ ही, चुनाव में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी या हिंसा को रोकने के लिए पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती सुनिश्चित की गई है। दो मार्च को होने वाले निकाय चुनाव के लिए 03 उप पुलिस अधीक्षक लगाए गए हैं वहीं 15 नाके व 09 पेट्रोलिंग पार्टी को लगाया गया है प्रत्येक बूथ के अंदर व बाहर पर्याप्त पुलिस बल तनाव किया गया है। वहीं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए दो रिजर्व पुलिस बल भी तैयारी हालत में रखी गए हैं।

2 व 9 मार्च को सवेतन अवकाश

उपायुक्त महावीर कौशिक ने बताया कि हरियाणा सरकार ने उन क्षेत्रों के पंजीकृत मतदाताओं के लिए 2 मार्च तथा 9 मार्च, 2025 (रविवार) को अवकाश घोषित किया है, जहां नगर निगमों, नगर परिषदों और नगर पालिकाओं के चुनाव होने हैं। मानव संसाधन विभाग द्वारा इस संबंध में अधिसूचना जारी की गई है। महावीर कौशिक ने बताया कि अधिसूचना के तहत सरकार के सभी कार्यालयों, बोर्डों/निगमों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ-साथ राज्य में स्थित विभिन्न कारखानों, दुकानों और निजी प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों/श्रमिकों, जो इन क्षेत्रों के पंजीकृत मतदाता हैं, के लिए सवेतन अवकाश रहेगा।

राजकीय बहुतकनीकी संस्थान में पोलिंग पार्टियों को जानकारी देकर मतदान केंद्रों के लिए किया रवाना

लोहारू। एसडीएम मनोज दलाल ने कहा कि चुनाव को निष्पक्ष ढंग से संपन्न करवाने के लिए पोलिंग टीम में शामिल सदस्यों का निष्पक्ष होना जरूरी है। उन्होंने लोहारू के राजकीय बहुतकनीकी संस्थान में पोलिंग पार्टियों को जानकारी देकर मतदान केंद्रों के लिए रवाना किया। रिहर्सल में ईवीएम, मोक पोल से लेकर वास्तविक पोल करवाने तक की विस्तार से जानकारी दी। एसडीएम मनोज दलाल ने चुनाव के दिन मोक पोल करवाने से लेकर मतदान संपन्न होने व ईवीएम जमा करवाने तक विस्तार से जानकारी दी। रिहर्सल में ईवीएम तैयार करने के बारे में जानकारी दी। एसडीएम ने कहा कि चुनाव प्रक्रिया में पोलिंग बूथ पर मतदान को निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से संपन्न करवाने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी पोलिंग अधिकारियों पर निर्भर करती है। उन्होंने बताया कि पोलिंग बूथ पहुंचते ही सभी तैयारियों को देखना होता है कि वहां पर सभी मूलभूत सुविधाएं हैं या नहीं। यदि किसी प्रकार की कमी है तो उसके बारे में तुरंत प्रभाव से संबंधित टीम के नोडल अधिकारी या प्रशासन को दे, ताकि समय रहते उसको पूरा करवाया जा सके।

पोलिंग पार्टी में स्वयं का निष्पक्ष होना जरूरीः उन्होंने कहा कि चुनाव को निष्पक्ष ढंग से संपन्न करवाने के लिए पोलिंग पार्टी में स्वयं का निष्पक्ष होना जरूरी है। चुनाव के दौरान कोई भी अधिकारी या कर्मचारी चुनावी ड्यूटी के अलावा किसी भी गतिविधि में हिस्सा नहीं ले सकता। चुनाव प्रक्रिया को संपन्न करवाने में नियुक्त अधिकारियों व कर्मचारियों की जिम्मेदारी और भी अधिक बन जाती है। ऐसे में पोलिंग अधिकारियों के साथ-साथ पोलिंग टीम में शामिल सभी सदस्यों का निष्पक्ष होना जरूरी है। अपने साथ नियुक्त पुलिस अधिकारियों के साथ तालमेल बनाएं।

तकनीकी खराबी की दें जानकारी

एसडीएम मनोज दलाल ने कहा कि ईवीएम को सही ढंग से तैयार करना आना चाहिए। इसके साथ ही ईवीएम में आने वाली तकनीकी खराबी के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए ताकि उसे तुरंत प्रभाव इक्सपर्ट से दुरूस्त करवाया जा सके। मास्टर ट्रेनर ललित कुमार, श्यामसुंदर सांगवान, राजीव वत्स एसईपीओ दीपक शर्मा आदि ने ईवीएम को तैयार करने के बारे में विस्तार से समझाया। पोलिंग पार्टियों को मोक पोल से लेकर वास्तविक पोल करवाने की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस दौरान तहसीलदार नवनीत,नायब तहसीलदार शेखर नरवाल , नपा सचिव तेजपाल तंवर, एसईपीओ दीपक शर्मा सहित चुनाव प्रक्रिया से जुड़े अनेक अधिकारी मौजूद रहे।

बवानीखेड़ा नगर पालिका के लिए 16 बूथों पर डाले जाएंगे वोट

बवानीखेड़ा। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी महावीर कौशिक के निर्देशानुसार शनिवार को राजकीय महिला महा विद्यालय में अंतिम रिहर्सल के बाद पोलिंग पार्टियों को मतदान केंद्रों के लिए रवाना किया गया। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम महेश कुमार ने बताया कि रविवार को बवानीखेड़ा नगर पालिका के अध्यक्ष और 16 वार्डों के पार्षद पदों के लिए मतदान होगा। वोटिंग सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक चलेगी। जिसमें 16863 मतदाता भाग लेंगे। वहीं मतदान केन्द्रों में मोबाइल फोन की पूर्णतया पाबन्दी सुनिश्चित की जानी है। मतदान से एक घंटा पहले सभी उम्मीदवारों और उनके पोलिंग एजेंटों की मौजूदगी में मॉक पोल किया जाएगा और इसकी जानकारी तुरंत उच्च अधिकारियों को दी जाएगी। रिटर्निंग अधिकारी ने बताया कि मतदान केंद्रों पर कंट्रोल यूनिट और बैलेट यूनिट की जांच, मॉक पोल, मतदान सामग्री का मिलान और सीलिंग प्रक्रिया का पालन करना जरूरी होगा। रिटर्निंग अधिकारी महेश कुमार ने बताया कि नगर पालिका चुनाव के लिए 16 पोलिंग बूथ बनाए गए हैं। मतदान आज रविवार 2 मार्च को सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक होगा। मतगणना 12 मार्च को राजकीय महिला महाविद्यालय के सभागार में होगी।

निकाय चुनाव में बढ़-चढकर भाग लें मतदाता, वोटर लिस्ट में नाम जरूरी

भिवानी। उपायुक्त महावीर कौशिक ने मतदाताओं का आह्वान करते हुए कहा है कि वे 2 मार्च को होने वाले निकाय चुनाव में बढ़-चढ़ कर मतदान करें। मतदान में केवल वही मतदाता मताधिकार का उपयोग कर सकेगा, जिनका नाम मतदाता सूची में शामिल है। सभी मतदाताओं को मतदान करने के लिए अपने साथ फोटो युक्त पहचान पत्र लेकर आना होगा। वोटर कार्ड के अलावा अन्य वैकल्पिक पहचान पत्र दिखाकर भी वोट डाल सकते हैं।

इनमें से एक आइडी जरूर लेकर आएं : उपायुक्त

उपायुक्त ने कहा कि मतदाताओं के पास यदि वोटर कार्ड नहीं हैं तो वे अन्य वैकल्पिक पहचान पत्र दिखाकर भी वोट डाल सकते हैं। ऐसे मतदाता पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, केंद्रीय एवं राज्य सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, स्थानीय निकायों या अन्य पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग द्वारा कर्मचारियों को जारी सेवा पहचान पत्र, बैंक या डाकघर द्वारा जारी फोटो युक्त पहचान पत्र, स्वतंत्रता सेनानी फोटो पहचान पत्र, सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी फोटोयुक्त एससी, एसटी, ओबीसी प्रमाण पत्र, सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी फोटोयुक्त शारीरिक विकलांगता प्रमाण पत्र, फोटोयुक्त शस्त्र लाइसेंस, मनरेगा कार्ड, फोटोयुक्त संपत्ति दस्तावेज, पेंशन दस्तावेज जैसे भूतपूर्व सैनिक, पेंशन बुक, पेंशन भुगतान आदेश, भूतपूर्व विधवा आश्रित प्रमाण पत्र, बुढ़ापा पेंशन आदेश, विधवा पेंशन आदेश फोटो सहित, स्वास्थ्य बीमा योजना स्मार्ट कार्ड फोटो सहित, राशन कार्ड, यूआईडीएआई द्वारा जारी आधार कार्ड दिखाकर वोट डाल सकते हैं।

मास्टर ट्रेनरों ने ईवीएम तैयार करने की जानकारी दी : एसडीएम

भिवानी। एसडीएम वीरेंद्र सिंह ने कहा कि चुनाव को निष्पक्ष ढंग से संपन्न करवाने के लिए पोलिंग टीम में शामिल सदस्यों का निष्पक्ष होना जरूरी है। उन्होंने सिवानी के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पोलिंग पार्टियों को जानकारी देकर मतदान केंद्रों के लिए रवाना किया। रिहर्सल में ईवीएम, मोक पोल से लेकर वास्तविक पोल करवाने तक की विस्तार से जानकारी दी। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम वीरेंद्र सिंह ने चुनाव के दिन मोक पोल करवाने से लेकर मतदान संपन्न होने व ईवीएम जमा करवाने तक विस्तार से जानकारी दी। रिहर्सल में ईवीएम तैयार करने के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। एसडीएम वीरेंद्र सिंह ने कहा कि पोलिंग बूथ पहुंचते ही सभी तैयारियों को देखना होता है कि वहां पर सभी मूलभूत सुविधाएं हैं या नहीं। उन्होंने कहा कि चुनाव प्रक्रिया को संपन्न करवाने में नियुक्त अधिकारियों व कर्मचारियों की जिम्मेदारी और भी अधिक बन जाती है। ऐसे में पोलिंग अधिकारियों के साथ-साथ पोलिंग टीम में शामिल सभी सदस्यों का निष्पक्ष होना जरूरी है। इस दौरान नायब तहसीलदार कृष्ण कुमार, नगर पालिका सचिव सुनील कुमार सहित चुनाव प्रक्रिया से जुड़े अनेक अधिकारी मौजूद रहे।

कबड्डी प्रतियोगिता की प्रथम टीम को 51 हजार की नकद राशि मिलेगी

भिवानी। शहीद-ए-आजम भगत सिंह सेवा ट्रस्ट द्वारा शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में 21 मार्च को राजकीय महाविद्यालय में शहीदी दिवस ओपन नेशनल महिला कबड्डी चैंपियनशिप का आयोजन किया जाएगा। चैंपियनशिप में देशभर से महिला कबड्डी खिलाड़ी पहुंचेंगे। चैंपियनशिप के आयोजन को लेकर ट्रस्ट के पदाधिकारियों की बैठक पुराना बस स्टैंड पर स्थित ट्रस्ट कार्यालय में हुई। शहीद-ए-आजम भगत सिंह सेवा ट्रस्ट के प्रधान मोनू तालु ने बताया कि प्रतियोगिता में पहला इनाम 51 हजार रुपये, दूसरा इनाम 31 हजार रुपये तथा तीसरा इनाम 21 हजार रुपये रखा गया है। इसके अलावा बेस्ट रैडर व बेस्ट कैचर को 2100-2100 रुपये सम्मान राशि से सम्मानित किया जाएगा। मोनू तालु ने बताया कि प्रतियोगिता में सभी मैच मिट्टी पर होंगे' जिसकी इंट्री फीस 300 रुपये निर्धारित की गई है। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता में विवाद पर कमेटी व रैफरी का फैसला अंतिम एवं मान्य होगा। इस मौके पर फूलसिंह इंदौरा, अशोक बुड़ानिया, जयंत सैन, मुनेश लेघा, पवन रापड़िया, तेजपाल जांगड़ा, नवीन शर्मा, देवा, चंद्रमोहन शंकर नर्सरी संचालक, अमित कोहाड़, सोमबीर, मुकुल पूनिया, संजय कोच आदि मौजूद रहे।

सीआईए स्टाफ ने गांजे के साथ युवक किया गिरफ्तार

भिवानी। नशे के साथ पकड़े गए आरोपी पुलिस हिरासत में।

भिवानी। पुलिस टीम के द्वारा आरोपी से 02 किलो 16 ग्राम गांजा किया बरामद। पुलिस अधीक्षक नीतीश अग्रवाल के द्वारा जिला पुलिस को जिले में मादक पदार्थ रखने व बेचने का कार्य करने वाले आरोपियों के विरुद्ध प्रभावी कानूनी कार्रवाई अमल में लाए जाने के निर्देश दिए गए थे जो इन्हीं निर्देशों के तहत कार्रवाई करते हुए सीआईए स्टाफ प्रथम भिवानी ने एक व्यक्ति को मादक पदार्थ गांजा के साथ गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।

सीआईए स्टाफ प्रथम भिवानी के उप निरीक्षक राजेश कुमार अपनी टीम के साथ गश्त पड़ताल ड्यूटी चिड़ियाघर भिवानी के पास मौजूद थे जो पुलिस टीम को विश्वसनीय सूत्रों से सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति बासिया भवन भिवानी के पास खड़ा हुआ है जिसके पास भारी मात्रा में मादक पदार्थ है पुलिस टीम के द्वारा सूचना की महत्वता को देखते हुए बताए गए स्थान पर रेड करके एक व्यक्ति को मादक पदार्थ के साथ गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान समीर पुत्र सुरेंद्र निवासी हालू मोहल्ला भिवानी के रूप में हुई है। पुलिस टीम के द्वारा आरोपी समीर से 02 किलो 16 ग्राम गांजा बरामद किया गया।

कंवर साहेब महाराज ने साध संगत को प्रवचनों से किया निहाल

गुरु की सीख को जीवन में उतार लो, नाम भक्ति सरल हो जाएगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

गुरु की सीख को जीवन में उतार लो नाम भक्ति सरल हो जाएगी। गुरु दरबार की सेवा सर्वोत्तम सेवा है और यदि यह सेवा स्वेच्छा से की गई हो तो उसमें प्रेम श्रद्धा और विश्वास के गुण शामिल हो जाते हैं और इन गुणों से लबरेज कार्य सद्कार्य कहलाते हैं और सेवादारो की उपस्थिति सत्संग कहलाती है। यह सत्संग वचन परमसंत सतगुरु कँवर साहेब महाराज ने भिवानी के रोहतक रोड पर स्थित राधास्वामी आश्रम में सत्संग में सेवाकार्य के लिए जुड़े सेवादारो को फरमाये।

हुजूर महाराज स्वयं के 78वे जन्मदिवस के अवसर पर 2 मार्च को होने वाले सत्संग व भंडारे की तैयारियों के लिए जुटे सेवादारो को दर्शन और सत्संग दे रहे थे। भजन में चाहे मत बैठना लेकिन अपनी संतान को अच्छा इंसान बना कर चले जाना आपका सत्संग सार्थक हो जाएगा। हुजूर ने कहा कि होवे वहीं जो राम रची राखा। जब होना ही वही है तो क्यों कुतर्क और विवाद करते हो। महात्मा बनना चाहते हो और जीवन में सारे काम गन्दे करते हो। किसको धोखा दे रहे हो। केवल खुद को। उन्होंने कहा कि हमारी हालत उस बगुले की भांति है जो मोतियों की जगह मछली पर आंख लगाए बैठा है। उन्होंने कहा कि परोपकार और परहित के लिए प्राण भी न्यौछावर करने पड़े तो कर दो। अच्छी नियत रखो,बुरे कर्मो से तौबा करो। गुरु महाराज ने कहा नाम के ऋणी रहो क्योंकि नाम आपके बुझे दीए को रोशन करने वाला है। उन्होंने कहा कि कोड़ा होने यानी झुकने से कोढ़ जाता है मुधा यानी घुटने टेककर बन्दगी करने वाले के विकार चले जाते हैं। इससे बढ़कर जो दण्डवत बन्दगी करता है उसके तो वारे न्यारे हैं। उन्होंने कहा कि गुरु के सन्मुख जाने से उनके गुण हमारे अंदर सम्माहित होते हैं। जैसे अग्नि के पास जाने से तपिश जल के पास जाने से शीतलता मिलती है उसी प्रकार भक्ति से मन को शांति मिलती है।

भिवानी। आयोजित सत्संग में प्रवचन देते संत कंवर साहेब।

मुख्यध्यापक के पद से सेवानिवृत्ति ली और संभाली गद्दीः गुरु एवं राधास्वामी सत्संग दिनोद के अधिष्ठाता परमसंत ताराचन्द महाराज के चोला परित्याग के पश्चात 1997 में गुरु के हुक्म को मानते हुए 49 वर्ष की आयु में राजकीय स्कूल के हेडमास्टर पद से स्वैछिक सेवानिवृत्त होकर गुरु गद्दी सम्भाली। आपके तेजस्वी मार्गदर्शन में राधास्वामी सत्संग दिनोद ने 12 शाखाओं से 53 शाखाओं तक विस्तार पाया। 1997 से लेकर अब तक आपसे 15 लाख से ऊपर लोगो ने नाम दान लेकर आध्यात्मिक उन्नति पाई। आपने नशा मुक्ति, सदाचार, मांसाहार त्याग, जल संरक्षण, पर्यावरण सरंक्षण जैसी सामाजिक मुहिम चलाकर कई कुरीतियों को नेस्तानाबूद किया है। आपकी प्रेरणा से 2007 से अब तक 2 लाख यूनिट रक्त का दान सत्संगी कर चुके हैं जो अपने आप में एक अलौकिक कीर्तिमान है।

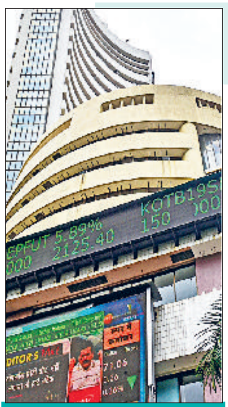

मार्केट क्रैश

शंभू भद्र

अक्टूबर 2024 से अब तक निफ्टी हर महीने गिरावट में बंद हुआ और 5 महीने में यह 12 प्रतिशत गिर चुका

बाजार गिरे तब क्या करना चाहिए?

शेयर बाजार में आज गिरावट दर्ज की गई है। लगातार बाजार को गिरता देख निवेशक परेशान हो रहे है ऐसे में आपको बताते है बाजार की गिरावट के टाइम आपको क्या करना चाहिए। शेयर बेच देना चाहिए या एसआईपी बंद कर देना चाहिए या बाजार में टिके रहना चाहिए?

बाजार जब गिरता है तो निवेशकों को कुछ समझ नहीं आता है कि शेयर बेच दे, एसआईपी बंद करें या बाजार में टिके रहें। अक्टूबर 2024 से निफ्टी हर महीने गिरावट में बंद हुआ है और ये 5 महीने में 12 प्रतिशत गिर चुका है। 1996 के बाद ऐसा पहली बार हुआ है कि बाजार में लगातार पांच महीने गिरावट आई है। इससे पहले साल 1996 में जुलाई से लेकर नवंबर महीने के बीच बाजार में लगातार 5 महीने गिरावट देखी गई थी। इन 5 महीनों के दौरान निफ्टी 50 इंडेक्स 26 प्रतिशत गिरा था। अमेरिका से लेकर यूरोप तक में की गई एकेडमिक स्टडीज से पता चलता है कि जब भी लोग बाजार में निवेश को लेकर घबराएं या चिंतित रहते हैं तब-तब बाजार ने एवरेज से ज्यादा रिटर्न दिया है। इसका मतलब है जब भी आप सोचते हैं कि शेयर बेच देना चाहिए, एसआईपी बंद कर देना चाहिए और बाजार से निकल जाना चाहिए उस समय ही बाजार में निवेश का सबसे बेहतर समय होता है। साल 2008 में 21 जनवरी को सेंसेक्स एक ही दिन में करीब 1400 अंक गिर गया था। वहीं 2008 के अंत तक सेंसेक्स 20,465 अंक से गिरकर 9716 अंक पर आ गया। वर्ष 2010 सितंबर में सेंसेक्स फिर से 20,000 अंक को पार कर गया। इसके बाद 2020 में कोरोना महामारी के कारण एक हफ्ते में सेंसेक्स 42,273 अंक से गिरकर 28,288 अंक पर आ गया था। 2020 अप्रैल से इसमें रिकवरी देखने को मिली और सेंसेक्स वर्ष के अंत तक 47,751 के स्तर पर पहुंच गया। मतलब, जब-जब बाजार में गिरावट आई है इसमें तेजी से रिकवरी भी दिखी गई है। ऐसे में जो निवेशक पहले से इन्वेस्टेड है उन्हें अपने निवेश में वैसे ही बना रहना चाहिए और जो लोग नया निवेश करना चाहते हैं वह थोड़ा-थोड़ा करके निवेश कर सकते हैं।

शेयर बाजार लगातार क्यों गिर रहे?

विदेशी निवेशकों ने अक्टूबर 2024 से फरवरी 2025 तक पांच महीनों में भारतीय बाजार से 3.11 लाख करोड़ रुपए निकाल लिए हैं। इसके अलावा निवेशकों को चीनी कंपनियों के शेयर भारतीय कंपनियों के शेयरों की तुलना में ज्यादा सस्ते दिख रहे हैं। खाने-पीने की चीजें महंगी होने के कारण अक्टूबर 2024 में रिटेल महंगाई बढ़कर 6.21% पर पहुंच गई थी, जो महंगाई का 14 महीनों का उच्चतम स्तर था। खाने-पीने की चीजें सस्ती होने से जनवरी 2025 में रिटेल महंगाई घटकर 5 महीने के निचले स्तर 4.31% पर आ गई थी। लेकिन ये कमी निवेशकों का विश्वास बहाल करने के लिए काफी नहीं है। हाल के महीनों में देखा गया कि भारतीय अर्थव्यवस्था धीमी हो गई है। डोनाल्ड ट्रम्प की ट्रेड पॉलिसीज से निवेशक काफी चिंतित है। भारत सहित कई अन्य देशों पर रेसिप्रोकल टैरिफ लगाने की अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की धमकी से बाजार में अनिश्चितता दिखाई दे रही है। ट्रम्प ने बीते दिनों कहा था, चाहे वो कोई भी देश हो- भारत या चीन, वे हम पर जितना चार्ज करते हैं, हम भी उतना ही रेसिप्रोकल टैरिफ लगाएंगे, हम व्यापार में बराबरी चाहते हैं।

चीन की ओर रुझान

विदेश संस्थागत निवेशकों का निवेश चीन भी जा रहा है। चीन की सरकार ने पिछले साल देश की अर्थव्यवस्था का कायाकल्प करने के लिए बड़े निवेश का एलान किया था। इस निवेश के बाद एफआईआई चीन के बाजार में जाने लगे थे। यह दौर अभी भी जारी है। ट्रंप की जीत के बाद अमेरिकी बाजार दुनियाभर से निवेश आकर्षित कर रहा है। दूसरी तरफ संस्थागत निवेश के लिए चीन का बाजार एक मजबूत विकल्प के तौर पर उभरा है। चीन की सरकार के नए प्रयासों ने एक सकारात्मक भावना पैदा की है। चीन ने ब्याज दरों में कटौती की, मार्केट में पैसा डाला और अर्थव्यवस्था को स्थिर किया। इससे निवेशकों को कॉन्फिडेंस मिला है।

उथल-पुथल में अर्थव्यवस्था का हाल

भारत पर सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था का तमगा लगा रहेगा? गांवों की मांग और सरकार का जोर इसे बचा सकता है। तमाम बुरी खबरों के बीच भारत की अर्थव्यवस्था में हम कुछ अच्छे संकेत देख सकते हैं। वित्त वर्ष 2024-25 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में जीडीपी ग्रोथ 6.2 फीसदी रही, जो जुलाई-सितंबर तिमाही में 5.4% थी। अच्छे मानसून का इसमें बड़ा योगदान है, ग्रामीण इलाकों में लोगों के पास खर्च करने को पैसा आया है। सरकार ने भी खर्च में तेजी लाई है। पिछली तिमाही में हालात ठीक नहीं थे। शहरी मांग कमजोर थी। अप्रत्याशित रूप से शहरी इलाकों में लोगों के खर्च में कमी आई। पिछले साल चुनाव की वजह से सरकारी खर्च भी रुका था। एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में मंदी के बादल मंडराते हुए दिख रहे थे।

टैरिफ का मामला उलझा

5.4% ग्रोथ रेट सात तिमाहियों में सबसे कम था। वैश्विक स्तर पर परेशानियाँ कम नहीं हैं। अमेरिका के साथ टैरिफ का मसला उलझा हुआ है। ट्रंप प्रशासन टैरिफ की बात कर रहा है। इससे वैश्विक अनिश्चितता बढ़ी है। विनिर्माण और सर्विस सेक्टर पर असर पड़ा है। आने वाले दिनों में व्यापार, होटल और परिवहन में भी सुस्ती रह सकती है। रियल एस्टेट और फाइनेंशियल सर्विसेज भी कमजोर हैं। अब अच्छी बातों पर एक नजर डालते हैं तो कृषि क्षेत्र ने अच्छा प्रदर्शन किया। फसल अच्छी हुई। पिछले तीन महीनों में 4.4% की वृद्धि थी। केंद्र और राज्य सरकारें पूंजीगत व्यय (कैपिटल एक्सपेंडिचर) बढ़ा रही हैं। सड़कें, पुल और प्रोजेक्ट्स पर पैसा लग रहा है। इनसे अर्थव्यवस्था को सहारा मिल सकता है। रिजर्व बैंक ने हाथ खोले हैं। नीतिगत दरें घटाईं, तरलता (लिक्विडिटी) बढ़ाई। सख्त नियमों को टाला, पर 2025-26 में भी जीडीपी दर 7% से नीचे रहने का अनुमान है। अमेरिकी टैरिफ का असर छोटा होगा, पर कुछ सेक्टर्स को नुकसान होगा। विनिर्माण और सर्विसेज पर दबाव है। बजट में टैक्स राहत दी गई। इससे उपभोक्ताओं को फायदा होगा, पर वैश्विक चुनौतियाँ खत्म नहीं हुईं। तो क्या भारत पर सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था का तमगा लगा रहेगा? फिलहाल उम्मीदें कायम हैं।

ये तबाही कब तक जारी रहेगी?

मार्च में कुछ रिकवरी देखने को मिल सकती है। मैक्रोइकॉनमिक स्तर पर बेहतर खबरें आ सकती हैं और कुछ एफआईआईज भी भारतीय बाजार में लौट सकते हैं। अभी विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा भारी बिकवाली, अमेरिकी बांड पर बढ़ती आय, रुपये में भारी गिरावट, तीसरी तिमाही के आय में सुस्ती और हाई वैल्यूवेशन ने हाल के महीनों में बाजार की धारणा को प्रभावित किया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से लिए गए टैरिफ को लेकर फैसले ने बाजार की दिशा-दशा बदली है। ऐतिहासिक रूप से मार्च का महीना तेजड़ियों के पक्ष में रहा है, यानी मार्च में शेयर बाजार अक्सर तेजी में रहा है। पिछले 15 सालों में बेंचमार्क इंडेक्स ने 10 बार पॉजिटिव रिटर्न दिया है और निवेशकों की कमाई कराई है। 30 साल पहले ही मार्च के दौरान तेजी रही थी। लंबी अवधि के नजरिए के हिसाब से अच्छे शेयरों को खरीद सकते हैं। वित्त वर्ष 26 में भारतीय इक्विटी बाजारों के लिए जोखिम और चुनौतियों को देखें तो भारत की विकास संभावनाएं आशाजनक हैं, पर जोखिम भी हैं। निकट भविष्य में बाजार में और कमजोरी नजर आ रही है। निफ्टी शॉर्ट टर्म में और गिरावट की उम्मीद की जा सकती है।

डावांडोल बाजार में क्या अपनाएं रणनीति

यह पूरा हफ्ता निवेशकों के लिए खराब गुजरा है। इसलिए जब गिरावट का दौर हो तो शेयर में निवेश के प्रति सतर्क रहना जरूरी है। एक शेयर ब्रोकर ट्रेडेड मूल्य पर धन कमाता है। इसलिए ज्यादातर ब्रोकरेज हाउस मुफ्त में सलाह दिया करते हैं। ध्यान रहे जब भी नुकसान होगा, आपका ही होगा। इस हफ्ते आपके निवेश की स्ट्रैटेजी क्या होनी चाहिए? अगर आप अपने धन से हाथ नहीं धोना चाहते तो कुछ बुनियादी नियमों का ध्यान रखें।

निवेश के लिए अपनाएं ऐसी स्ट्रैटेजी

ट्रेडर व निवेशक दोनों को अलग-अलग स्ट्रैटेजी अपनानी चाहिए। ट्रेडर है तो स्टॉपलॉस के साथ ट्रेड ले सकते हैं। गिरावट के माहौल का फायदा उठा सकते हैं। हालांकि ट्रेडरों को कम क्वांटिटी के साथ ट्रेड करना चाहिए। इस वक्त ट्रेडरों के लिए भी काफी मुश्किल भरा मार्केट है। निवेशक के लिए अच्छा है कि वह सीधे निवेश से बचें। एसआईपी जारी रखें। कम अग्रेसिव निवेशक थोड़ा इंतजार करें। बाजार में रिवर्सल के संकेतों का वेट करें। इस वक्त ट्रेडर व निवेशक दोनों संभल कर अपनी स्ट्रैटेजी बनाएं। वारेन बफे के मुताबिक गिरते बाजार में निवेश करने का जोखिम उठाना चाहिए।

टिप्स का अध्ययन करें

लिटमस टेस्ट करें। आपके निवेश करने के पहले, किसी भी विश्लेषक की टिप्स का कुछ समय तक परीक्षण करें। उसके बाद ही फैसला करें। कई ब्रोकरेज हाउस अपनी बड़ी रिसर्च टीम का दावा करते हैं। उनकी रोजाना रिपोर्ट आती हैं। इनमें से कितनी सही रहती होंगी।

पहले रिसर्च करें, बाद में नहीं

निवेश के पहले शेयर के बारे में ठीक से रिसर्च करें। उस पर ब्रोकर से विस्तार से रिपोर्ट मांगें। लंबी अवधि की संभावनाएं अच्छी हों तभी निवेश करें। ट्रिगर प्राइस और टार्गेट प्राइस वाली टिप्स पर समय बर्बाद नहीं करें।

जो तेज चढ़ता है, तेज गिरता है

जब भी ऊंचाई पर कोई आंकड़ा देखा जाता है, उसमें प्रगति की बड़ी संभावना दिखाई देती है। लेकिन जब कोई शेयर काफी बढ़ चुका हो या किसी सेक्टर में काफी तेजी आ चुकी हो, सतर्क रहना चाहिए। ज्यादा पीई अनुपात का मतलब है कि भविष्य में प्रगति दर घटने वाली है।

समय नहीं है तो सिप से लगाएं धन

अगर आपके पास अपने पोर्टफोलियो में नए शेयर चुनने का समय नहीं है तो शेयर बाजार में सीधे धन नहीं लगाएं। सिस्टैमेटिक इनवेस्टमेंट प्लान (सिप) में निवेश से भी काफी मूल्य निर्मित किया जा सकता है।

अस्थिरता होने पर नहीं करें ये गलतियां

घबराकर बिकवाली ना करें

बाजार में अस्थिरता होने पर घबराहट में बिकवाली करने से बचें। यह सबसे पहला नियम है। कयासबाजी पर तुरंत प्रतिक्रिया करना हानिकारक साबित हो सकता है। आपको हमेशा यह बात देखनी चाहिए कि किसी शेयर की पिटाई क्यों हुई है? इसे देखते हुए ही किसी शेयर को बेचने का फैसला करना चाहिए। अगर आप गिरावट की वजहों से संतुष्ट नहीं हैं तो इस बात पर विचार करें कि क्यों आपने उस शेयर को खरीदा था। इससे आपको सही समीक्षा करने में मदद मिलेगी।

सिप को नहीं रोकें

आपका कुछ भी फैसला हो, लेकिन, म्यूचुअल फंड में सिप को रोकने की गलती कतई न करें। इससे सिप को लेने का मकसद विफल हो जाता है। बाजार में मंदी का दौर ही वह समय होता है जब आपको इनके साथ जरूर बने रहना चाहिए। इससे आपको अपने लंबी अवधि के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलती है। सिप को रोककर आप इक्विटी में चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ खो देंगे। गिरावट के समय आपको कम कीमत पर ज्यादा यूनिटें खरीदने का मौका मिलेगा। बाजार के वापसी करने पर आप इसका फायदा उठा सकेंगे। लंबी अवधि में इक्विटी से सबसे अच्छा रिटर्न मिलता है। इसलिए इनके साथ बने रहने में समझदारी है।

सिर्फ गिरावट के समय नहीं खरीदें

केवल पिटे हुए स्टॉकों में पैसा लगाने में आप गलती भी कर सकते हैं। इस बात का अंदाजा लगा पाना बेहद मुश्किल है कि किसी कंपनी का निचला स्तर क्या होगा। इससे आप सही मूल्य को आंकने के चक्कर में बुरी तरह से फंस सकते हैं। नए निवेशकों को फाइनेंशियल सेक्टर के शेयरों से दूर रहना चाहिए। किसी कंपनी में निवेश करने से पहले उसके बुनियादी पहलुओं को देखना चाहिए। इस बात की भी जानकारी करनी चाहिए कि कंपनी का ट्रैक रिकॉर्ड कैसा रहा है। उसके रेवेन्यू, प्रॉफिट, प्राइस-टू-अर्निंग रेशियो और डेट-टू-इक्विटी रेशियो के बारे में जानकारी कर लेनी चाहिए। अगर आप खुद यह काम नहीं कर सकते हैं तो किसी प्रोफेशनल की सलाह लेनी चाहिए।

एक सेक्टर में लिवाली न करें

हमेशा डायवर्सिफिकेशन के बारे में सोचना चाहिए। कहते हैं कि एक टोकरी में सभी अंडों को रखना बड़े नुकसान को दावत दे सकता है। इसलिए गिरावट के समय अच्छे शेयरों में निवेश के मौके तलाशने चाहिए। केवल एक सेक्टर के शेयरों में ही दांव लगाने से बचना चाहिए।

कर्ज लेकर शेयरों में न लगाएं

कई लोग ज्यादा रिटर्न के लिए कर्ज लेकर शेयरों में लगा देते हैं इस तरह के निवेश के तरीके को मार्जिन इंवेस्टिंग कहा जाता है। बेशक इस तरह से अच्छा रिटर्न कमाया जा सकता है। लेकिन, इसमें नुकसान भी बहुत ज्यादा होता है। इस तरह के निवेश के तरीके से हमेशा ही बचना चाहिए। बाजार में अस्थिरता के वक्त तो और भी चौकन्ना हो जाना चाहिए।

इक्विटी एनालिसिस सीखना आसान

ऐसे कर सकते हैं शुरूआत

जब आप इक्विटी में निवेश करने जाते हैं तो सबसे मुश्किल काम एनालिसिस समझा जाता है। एक छात्र कॉलेज में स्टॉक मार्केट गेम्स खेला करता था। उन्हें इस गेम में मजा आया, लेकिन वह यह भी जानता था कि यह पैसा बनाने का भरोसेमंद तरीका नहीं है। उसके बाद वे इक्विटी एनालिसिस कॉम्पिटिशन में शामिल हुआ और उन्हें पता चला कि उस फोरम में जिन केस पर चर्चा हुई, वे बेहद पेचीदा थे। क्या किसी नए शख्स के लिए इक्विटी एनालिसिस शुरू करने का कोई आसान तरीका हो सकता है? अगर किसी ने फाइनेंस की पढ़ाई नहीं की है तो वह इक्विटी एनालिसिस सीखने की शुरुआत कैसे करे? आइए जानते हैं। इक्विटी एनालिसिस में कई फैक्टर्स शामिल होते हैं। इसमें आपको सूचनाओं का गंभीरता से विश्लेषण करना पड़ता है। हालांकि, बुनियादी कॉन्सेप्ट्स सिंपल और सीधे हैं। आपको यह देखना होता है कि कंपनी में ऐसी क्वॉलिटी है, जिससे उसका मुनाफा लंबे समय तक बढ़ता रहे? यह सबसे बड़ा सवाल होता है। अगर जो भी एनालिसिस करें, उससे यह पता चलना चाहिए। यह नए बिजनेस के लिए मार्केट ऑपर्च्युनिटी हो सकती है या प्रमोटर्स की समझदारी या प्रॉडक्ट्स तैयार करने का इनोवेटिव तरीका, जिससे कम समय में कंपनी बाजार के बड़े हिस्से पर कब्जा कर ले। इन सभी कामकाज का असर आखिरकार कंपनी के मुनाफे पर पड़ता है।

मार्केट मंत्र | बिजनेस डेस्क

ऐसे समझें

एक ऐसे बिजनेस की कल्पना करिए, जिसकी शुरुआत प्रमोटर्स ने अपने जेब से लगाए पैसे से की हो। इनवेस्टर्स को रिटर्न देने के लिए बिजनेस को एसेट्स की जरूरत पड़ेगी, जिससे वह कोई प्रॉडक्ट बना सके या सर्विस ऑफर कर सके। यह पैसा इस काम के लिए लगाया जाता है और इससे फिर आमदनी होने लगती है। एनालिसिस की शुरुआत इससे की जा सकती है कि कंपनी सेल्स से जो कमाई कर रही है, उससे मुनाफा होगा। टैक्स के बाद जो मार्जिन बचता है, वह इनवेस्टरों के लिए होता है। इसलिए सबसे पहले आपको इस आंकड़े पर नजर डालनी चाहिए। उसके बाद यह सवाल करना चाहिए कि सेल्स में कैसे बढ़ोतरी होगी? क्या कंपनी ट्रेडिंग बिजनेस से जुड़ी हुई है? क्या वह पैसों का इस्तेमाल सामान खरीदने के लिए करती है। इस स्टॉक के क्लीयर होने पर उसे मुनाफा होने लगेगा। कुछ कैपिटल बिजनेस की एसेट्स में ब्लॉक हो सकता है। हालांकि, एसेट्स से जितनी सेल्स हासिल होगी, इनवेस्टर्स का रिटर्न उतना ही अच्छा होगा।

ऐसे करें आकलन

मान लीजिए कि किसी बिजनेस की शुरुआत 100 रुपये से होती है। इस पैसे को फिक्स्ड एसेट्स, स्टॉक और मैटीरियल्स में लगाया जाता है। इससे फिर सामान तैयार किया जाता है। साल के अंत में 150 रुपये की बिक्री हासिल होती है, जिसकी लागत 125 रुपये रहती है। इसमें टैक्स के बाद 25 रुपये का मुनाफा होता है। ऐसे में इनवेस्टर्स का रिटर्न 25 पर्सेंट होगा। अब मान लीजिए कि उस कैपिटल से कंपनी को 300 रुपये की सालाना सेल्स हासिल होती है क्योंकि वह साल में दो बार उतना सामान तैयार करके बेचती है। तब इनवेस्टरों का रिटर्न दोगुना हो जाएगा। एक बिजनेस जो कैपिटल की मदद से अधिक सेल्स हासिल करता है और वह एसेट्स में पहले जितना ही इनवेस्टमेंट करता है तो शेयरहोल्डर्स को अधिक रिटर्न मिलता है। एसेट्स टु सेल्स टर्नओवर से इनवेस्टर्स का रिटर्न बढ़ता है। सेल्स-एसेट्स ऐसा डेटा है, जिससे इनवेस्टर को बिजनेस की एसेट प्रॉडक्टिविटी का पता चलता है।

कर्ज की समझ जरूरी

तीसरी चीज कर्ज है। अगर कोई बिजनेस कैपिटल पर 25 फीसदी का रिटर्न हासिल करता है, तो प्रमोटर्स 10 फीसदी पर कर्ज लेकर उसमें इनवेस्ट करना पसंद करेंगे। मान लीजिए कि बिजनेस में 50 फीसदी इक्विटी और 50 फीसदी बॉरोइंग है। तब क्या होगा? उस वक्त ब्याज चुकाने के बाद मुनाफा 25 रुपये से घटकर 20 रुपये रह जाएगा। हालांकि, 50 रुपये के इक्विटी पर 20 रुपये के रिटर्न 40 फीसदी होगा। यह पहले के 25 फीसदी रिटर्न से अच्छा है। इसलिए एसेट टु नेटवर्थ डाटा को भी देखना चाहिए। रिटर्न ऑन इक्विटी प्रॉफिट मार्जिन, सेल्स एसेट्स और एसेट्स नेटवर्थ से डिसाइड होता है।

इक्विटी के दम से पूरे करें सपने

किसी भी लॉन्ग टर्म इनवेस्टमेंट में रिस्क रिवॉर्ड रेशियो का ज्यादा झुकाव इक्विटी इनवेस्टमेंट की तरफ होता है। रिस्क फ्री फिक्स्ड इनकम इनवेस्टमेंट की श्रेष्ठता तब धरी-की-धरी रह जाती है, जब हमें समझ आता है कि जोखिम से आजादी दिखने वाली चीज असल में कुछ हाथ नहीं आने की आजादी है। ये बात हमें तब समझ आती है जब हम रियल, इन्फ्लेशन एडजस्टेड, टैक्स बाद रिटर्न पर गौर करते हैं। हम जैसे ही इक्विटी निवेश की अपरिहार्यता को स्वीकार कर लेते हैं, हमारे सामने तुरंत यह सवाल आता है कि यह मुश्किल काम किया कैसे जाए?

निवेश के दो तरीके

जिन लोगों ने पहले कभी शेयरों में निवेश नहीं किया है उनके लिए यह तय करना मुश्किल है कि शुरुआत कहां से की जाए। वैसे इक्विटी निवेश के दो तरीके होते हैं। एक तरीका यह है कि आप शेयरों का चुनाव और खरीद-फरोख्त खुद करें। दूसरा, इक्विटी फंड्स के जरिए निवेश करें। दोनों का अंतिम मकसद एक ही होता है- इक्विटी से सुपीरियर रिटर्न हासिल करना। हालांकि, दोनों एक्टिविटीज एक दूसरे से एकदम अलग हैं। अगर आप एक्सपर्ट नहीं हैं या इसके लिए ज्यादा वक्त देने को तैयार नहीं हैं तो खुद निवेश करने के बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं। ऐसे में म्यूचुअल फंड्स बेहतर विकल्प होंगे। ऐसे कई लोग हैं, जो अपना पोर्टफोलियो खुद मैनेज कर रहे हैं और बेहतर रिटर्न पा रहे हैं। हालांकि, 100 में से 5 या 10 को कामयाबी मिल पाती है। इक्विटी म्यूचुअल फंड निवेश से इन दिक्कतों से छुटकारा पाया जा सकता है। इक्विटी निवेश का मूल मंत्र यह है कि आपकी नजर में कामयाब स्टॉक इनवेस्टिंग क्या है और इंफॉर्मेशन, एनालिसिस के आधार पर बनी निवेश योजना को अंजाम देने की क्षमता कितनी है। लेकिन म्यूचुअल फंड्स के जरिए इक्विटी निवेश के बहुत ज्यादा फायदे हैं। सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें अनुशासित डायवर्सिफिकेशन होता है। फंड मैनेजर्स संस्थागत दायरे में काम करते हैं जिसमें उन पर निवेश के कुछ नियम लागू होते हैं। इसमें पोर्टफोलियो डायवर्सिफाइड रहेगा और इंडिविजुअल शेयर, सेक्टर या स्टॉक टाइप को लगने वाले झटके से सुरक्षित रहेगा। दूसरा फायदा यह होता है कि इसमें छोटी रकम से निवेश शुरू किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड्स में आप कुछेक हजार रुपये से शुरुआत कर सकते हैं। यह आसान भी होता है। इक्विटी फंड्स का एक और फायदा ये होता है कि लॉन्ग टर्म में इनसे ज्यादा रिटर्न मिलता है। शेयरों के अट्रैक्शन के हिसाब से सभी इक्विटी पोर्टफोलियो में उनकी कुछ खरीदफरोख्त होती है।

ये पांच खूबियां, तभी निवेश में कामयाबी

बिजनेस डेस्क

लोकप्रिय मान्यता के विपरीत, पैसे कमाने के लिए प्रतिभा और कौशल की उतनी जरूरत नहीं होती है जितना उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए सही दृष्टिकोण का होना जरूरी होता है। आप शानदार रणनीतियां बनाते हैं, लेकिन उन पर अमल नहीं करते हैं तो आप ज्यादा कुछ नहीं कर पाएंगे। सफल निवेशक, अपने निवेश के मार्ग पर दृढ़ता और धैर्य के साथ आगे बढ़ते रहते हैं और लक्ष्य तक पहुंच कर ही मानते हैं। अगर आप भी निवेशक के तौर पर कामयाबी हासिल करना चाहते हैं तो आपे में पांच खूबियां जरूर होनी चाहिए।

पहले बचत, बाद में खर्च

सफल निवेशक महीने की शुरुआत बचत से करते हैं और खर्च बाद में करते हैं। पहले बचत करने से खर्च पर नियंत्रण रखने में मदद मिलती है। पैसे बनाने के लिए आपका भी पहला कदम यही होना चाहिए। आप ऑटोमैटिक तरीके से महीने की शुरुआत में ही अपनी बचत को लॉक कर सकते हैं। आप बैंक को आपके रेकरिंग डिपॉजिट अकाउंट या म्यूच्यूअल फंड एसआईपी के लिए हर महीने की शुरुआत में ही कुछ रकम काट लेने का स्थायी निर्देश दे सकते हैं।

उद्देश्य के अनुसार निवेश

व्यावहारिक लक्ष्य निर्धारित करना और उसी के हिसाब से निवेश करना एक और ऐसी ही खूबी है जो काफी फायदेमंद साबित होती है। इस बात पर ध्यान देते हुए कि संसाधन सीमित हैं, आपको अपने लक्ष्यों की प्राथमिकता के आधार पर रैंकिंग करनी चाहिए और अपने निवेश लक्ष्य के अनुसार निवेश साधनों का चयन करना चाहिए। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, शादी-ब्याह और रिटायरमेंट की प्लानिंग जैसे लक्ष्य दीर्घकालिक होते हैं और इसके लिए आपको म्यूच्यूअल फंड्स और पीपीएफ जैसे साधनों में निवेश करना चाहिए। दूसरी तरफ, कार खरीदना या छुट्टी में घूमने जाना जैसे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए लिक्विड फंड्स, रेकरिंग डिपॉजिट जैसे अल्पकालिक निवेश साधनों में निवेश किया जा सकता है।

जोखिम उठाने की क्षमता

सफल निवेशक जोखिम उठाने से घबराते नहीं हैं। अच्छा रिटर्न पाने के लिए आपको जोखिमवाले निवेश साधनों में निवेश करना चाहिए। अपना सारा पैसा किसी पारंपरिक संपत्ति में लगाकर आप ज्यादा मुनाफा नहीं कमा पाएंगे। यहां तक कि अधिकांश पारंपरिक संपत्तियों में भी थोड़ा-बहुत जोखिम तो होता ही है। ब्याज दरें समय-समय पर घटती-बढ़ती रहती हैं। उठाए जानेवाले जोखिम को किसी अच्छे रिस्क मैनेजमेंट प्लान की मदद से सुरक्षित किया जा सकता है।

निवेश में लाएं विविधता

अनुभवी निवेशक किसी एक एसेट पर ध्यान देने के बजाय अलग-अलग ऐसेट्स में निवेश करते हैं। उनका कहना है कि अपने सारे अंडे एक ही टोकरी में न रखें। अलग-अलग निवेश साधनों में अलग-अलग रिटर्न मिलने की संभावना रहती है और जोखिम भी अलग-अलग होता है। इक्विटी में बहुत अच्छा रिटर्न मिलता है लेकिन यह बहुत परिवर्तनशील होता है। ऋण निवेश साधनों (डेट इन्वेस्टमेंट इंस्ट्रूमेंट्स) में थोड़ा कम जोखिम होता है और कम रिटर्न मिलता है। दूसरी तरफ, रियल एस्टेट सम्बन्धी निवेश में कम जोखिम होता है और अच्छा रिटर्न भी मिलता है लेकिन इसमें लिक्विडिटी का अभाव होता है। इसलिए, पोर्टफोलियो बनाते समय किसी एक ऐसेट पर ध्यान देने के बजाय अलग-अलग ऐसेट्स में निवेश करना बेहतर होता है। इस तरह जोखिम भी कम हो जाएगा और रिटर्न से समझौता भी करना नहीं पड़ेगा।

पैसे निकालने की आदत छोड़ दें

अंतिम लेकिन बिल्कुल महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको अपने निवेश के मामले में धैर्य रखना पड़ेगा। सफल निवेशक किसी के कहने पर या इधर-उधर की बातों या विज्ञापनों पर आंख मूंदकर भरोसा करके पैसे निकालने की गलती नहीं करते हैं। मच्योरिटी से पहले निवेश की रकम निकाल लेने से लक्ष्य आधारित निवेश का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता है। अपने निवेश पर अटल रहने के लिए निवेश के उद्देश्य को याद रखना जरूरी है। दीर्घकालिक निवेशों को अबाधित छोड़ देने पर अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना रहती है। इसलिए समय से पहले अपने निवेश को भंजाने की गलती न करें।

सचेत रहते हुए रणनीति बनाएं, तभी गिरते बाजार में कमा पाएंगे निवेशक

अलर्ट | बिजनेस डेस्क

इस समय शेयर बाजार में लगातार गिरावट का दौर जारी है। ऐसे में निवेशकों को भी अलर्ट रहना होगा। भारतीय शेयर बाजार जबरदस्त हलचल से भरा हुआ है। निफ्टी 50 लगातार गिरावट के दौर से गुजर रहा है और अगर आगे भी यह ट्रेंड जारी रहा, तो यह 28 साल में अपनी सबसे लंबी गिरावट दर्ज करेगा। इससे पहले 1996 में ऐसी गिरावट देखने को मिली थी। निफ्टी लगातार पांच महीने तक गिरा है। लगातार गिरावट के इस माहौल में निवेशकों के मन में बड़ा सवाल है अब आगे की रणनीति क्या बनाई जाए, ताकि कुछ वसूली हो सके और निवेशक घाटे से उबर सकें। ऐसे में क्या करें, बाजार से बाहर निकलें? धैर्य बनाए रखें? (लेकिन कब तक?) या नए अवसरों की तलाश करें? इस रिपोर्ट में आपको ऐसे ही कुछ सवालों के जवाब मिलेंगे जो आपको बाजार की सही दिशा के बारे में जागरूक कर सकते हैं।

इस समय एक गिरावट तोड़ सकती है निफ्टी का 28 सालों का रिकार्ड

बाजार के आंकड़े किधर जा रहे

एक्सपर्ट्स की राय जानने से पहले बाजार की स्थिति पर एक नजर डालते हैं। निफ्टी पिछले साल सितंबर से गिर रहा है और इसमें लोअर टॉप-लोअर बॉटम पैटर्न बन रहा है। अक्टूबर 2024 से अब तक यह 11.7% गिर चुका है। फरवरी के पहले कुछ हफ्तों में ही इसमें 3% की गिरावट दर्ज हो चुकी है। सन 1990 के बाद से सिर्फ दो बार ऐसा हुआ है जब निफ्टी लगातार पांच महीने तक गिरा हो। पहली बार 1994-95 में जब यह 31.4% टूटा था और दूसरी बार 1996 में जब यह 26% गिरा था। मौजूदा गिरावट तुलनात्मक रूप से कम है, लेकिन चिंताजनक बनी हुई है। विदेशी निवेशकों की बिकवाली एक बड़ी वजह बन रहा है। अक्टूबर 2024 से एफआईआई (विदेशी संस्थागत निवेशक) 2 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की बिकवाली कर चुके हैं। वैश्विक कारणों को हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। चीन के बाजारों में जबरदस्त रिकवरी आई है, जिससे विदेशी निवेशक वहां शिफ्ट हो रहे हैं। इसके अलावा, अमेरिकी नीतियां भी उभरते बाजारों पर असर डाल रही हैं।

निवेशक क्या करें

एक्सपर्ट्स का मानना है कि मौजूदा गिरावट में सावधान रहने की जरुरत है मगर घबराने की जरूरत नहीं है, बल्कि यह एक रणनीतिक निवेश का अवसर भी हो सकता है। अब सवाल उठता है कि इस रणनीतिक निवेश की दिशा क्या होगी? हम ब्रोकरेज हाउस और एक्सपर्ट्स की राय के आधार पर इन्हें बिंदुवार रखते हैं।

निवेशकों के लिए धैर्य जरूरी

अगर आप लंबी अवधि के निवेशक हैं, तो आपको घबराने की जरूरत नहीं है। स्टॉक मार्केट में उतार-चढ़ाव सामान्य बात है। निफ्टी 50 का एक साल का फॉरवर्ड पी/ई अपने दीर्घकालिक औसत से नीचे कारोबार कर रहा है, जिसका मतलब है कि यह भविष्य में मजबूती पकड़ सकता है।

नई खरीदारी का सही समय

कुछ एक्सपर्ट्स का मानना है कि यह खरीदारी का एक अच्छा अवसर हो सकता है। एसबीआई सिक्योरिटीज सलाह देता है कि निवेशक बॉटम-अप स्टॉक-पिकिंग रणनीति अपनाएं और चरणबद्ध तरीके से उच्च गुणवत्ता वाले स्टॉक में निवेश करें।

ट्रेडर्स के लिए क्या रणनीति

अगर आप शॉर्ट-टर्म ट्रेडर हैं, तो यह समय सतर्क रहने का है, जानकारों का कहना है कि जब तक निफ्टी 22,850 के नीचे बना रहेगा, तब तक बिकवाली का दबाव रहेगा। गिरावट की स्थिति में 22,500-22,400 के स्तर तक जाने की संभावना है। ऐसे में ट्रेडर्स को स्टॉप-लॉस का सख्ती से पालन करना चाहिए।

टैक्स हार्वेस्टिंग का लाभ उठाएं

अगर आपने इस साल कुछ नुकसान उठाया है, तो आप इसे टैक्स बचाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।एसबीआई सिक्योरिटीज का सुझाव है कि अगले पांच हफ्तों में टैक्स हार्वेस्टिंग रणनीतियों पर ध्यान देना चाहिए। यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन टैक्स को संतुलित करने में मदद कर सकता है।

विदेशियों की रणनीति पर ध्यान दें

एक अन्य विशेषज्ञ के अनुसार, वर्तमान में 'भारत बेचो, चीन खरीदो' की रणनीति अपनाई जा रही है, लेकिन यह ट्रेंड हमेशा के लिए नहीं रहेगा। उभरते बाजारों में पैसा फिर से लौटेगा, और जब ऐसा होगा तो भारतीय शेयर बाजार को भी इसका लाभ मिलेगा।

कौन-से सेक्टर में निवेश करें

- आईटी सेक्टर : रुपये की कमजोरी के कारण आईटी कंपनियों को फायदा हो सकता है।
- बैंकिंग और फाइनेंस : मजबूत फंडामेंटल्स वाली कंपनियां इस गिरावट के बाद तेजी से उभर सकती हैं।
- रक्षा और मैन्युफैक्चरिंग : सरकार की मेक इन इंडिया पहल के कारण इन सेक्टर्स में ग्रोथ देखने को मिल सकती है।
- फार्मा और हेल्थकेयर : लंबी अवधि के लिए यह एक स्थिर निवेश विकल्प हो सकता है।

यह रखें ध्यान

कुल मिलाकर निफ्टी 50 ऐतिहासिक गिरावट के करीब जरूर है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि निवेशकों को घबराकर बाजार से बाहर निकल जाना चाहिए, यह एक ऐसा समय है जब सही रणनीति और धैर्य के साथ काम करने की जरूरत है। मार्केट एक्सपर्ट्स से मिली सीख यह है कि लॉन्ग-टर्म निवेशक गुणवत्तापूर्ण स्टॉक्स को होल्ड करें, शॉर्ट-टर्म ट्रेडर्स स्टॉप-लॉस के साथ चलें, और नए निवेशक चरणबद्ध तरीके से मजबूत कंपनियों में निवेश करें. बाजार में उतार-चढ़ाव हमेशा आते हैं, लेकिन स्मार्ट निवेशक वही होते हैं जो इन मौकों का सही इस्तेमाल करना जानते हैं।

खबर संक्षेप

तोशाम। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए।

शिविर में व्यक्तित्व विकास पर व्याख्यान

तोशाम। चौधरी बंसीलाल राजकीय महिला महाविद्यालय में सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित सात दिवसीय शिविर के पांचवें दिन शनिवार की शुरुआत एनएसएस गीत से हुई। इसके बाद स्वयंसेविकाओं ने योगाभ्यास किया। शिविर के प्रथम सत्र में तोशाम के मनोविज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर, डॉ. सुरजीत सिंह ने व्यक्तित्व विकास पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि यह एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास का समावेश होता है। द्वितीय सत्र में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें रस्साकशी, स्पून बैलेंसिंग और दौड़ जैसी प्रतियोगिताएँ शामिल थीं।

तनुष्का-किरण ने रिपोर्टर की भूमिका निभाई

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा के वीर शहीद श्री गुलाब सिंह पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में साहित्य क्लब का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुनील कुमार प्रोफेसर हिंदी राजकीय महिला महाविद्यालय बवानी खेड़ा रहे। कार्यक्रम का पूर्ण रूप से आयोजन हिंदी प्रवक्ता कमलजीत कपूरिया द्वारा किया गया। हिंदी प्रोफेसर सुनील कुमार द्वारा छात्राओं को साहित्य एवं पत्रकारिता में भविष्य, समाज के लिए साहित्य का योगदान, साहित्य उत्थान तथा इसके साथ-साथ रोजगार के लिए पत्रकारिता को महत्वपूर्ण बताया। मुख्य अतिथि ने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि उनको लेखन में आगे आना चाहिए। विद्यालय के प्राचार्य आनंद शर्मा ने छात्राओं को इस क्लब में बढ़ चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। प्राचार्य ने बताया कि विद्यालय के फेसबुक पेज पर यूट्यूब चैनल पर तथा मैगजीन में छात्राएं अपनी प्रतिभाएं दिखा सकती हैं। नौवीं कक्षा की छात्राएं तनुष्का और किरण ने रिपोर्टर की भूमिका निभाकर आज के कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए।

हर घर हर गृहिणी योजना का लाभ उठाएं : डीसी

भिवानी। उपायुक्त महावीर कौशिक ने पात्र परिवारों से हर घर हर ग्रहणी योजना का लाभ उठाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि हर घर हर गृहणी अंत्योदय परिवारों की महिलाओं के लिए एक बहुत महत्वाकांक्षी योजना है। महावीर कौशिक ने कहा कि खाद्य एवं पूर्ति विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि इस योजना के बारे में लोगों को जागरूक करें ताकि एक भी पात्र महिला इस योजना के लाभ से वंचित न रहे।उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा शुरू की गई हर घर- हर ग्रहणी योजना आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के जीवन में बड़ा बदलाव लाने की दिशा में महत्वपूर्ण योजना है। इस योजना के तहत पात्र परिवार 500 रुपये में गैस सिलेण्डर दिया जाता है।

सवा 15 किलो की चांदी की ध्वजा ले खाटू धाम को रवाना हुए पैदल यात्री

खाटू श्याम ध्वजा यात्रा श्रद्धा, भक्ति और आस्था का उत्सवः करूणागिरी

- यात्रा में 400 के करीब श्याम भक्त शामिल हुए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

छोटी काशी के नाम से विख्यात भिवानी के लोग धर्म-कर्म के कार्यो में विशेष रूचि रखते है, जिसके चलते यहां पर समय-समय पर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण अपनी हाजिरी लगाते है। इसी कड़ी में फाल्गुन मेले के उपलक्ष्य में श्रीश्याम खाटू मंडल द्वारा भिवानी से खाटू श्याम धाम के लिए पैदल यात्रियों का जत्था रवाना हुआ। यात्रा की विशेष बात ये है कि इसमें सवा 15 किलोग्राम की चांदी की ध्वजा लेकर श्रद्धालु रवाना हुए, जिसमें अनेक खाटू श्रीश्याम भक्त यात्रा में शामिल रहे। महामंडलेश्वर साध्वी करूणागिरी महाराज ने बताया कि फाल्गुन मेले के उपलक्ष्य में श्योलाल पुरी मंदिर से श्रीश्याम खाटू मंडल सवा 15 किग्रा की चांदी की ध्वजा लेकर रवाना हुए है। यात्रा में 400 के करीब श्याम भक्त शामिल है। यात्रा करीबन 33 वर्षो से लगातार हर वर्ष रवाना होती है। उन्होंने कहा कि खाटू श्याम ध्वजा यात्रा केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि श्रद्धा, भक्ति और आस्था का उत्सव है। यात्रा जीवन में सकारात्मक ऊर्जा एवं आध्यात्मिक शांति लाने का एक माध्यम मानी जाती है, ऐसी धार्मिक यात्राएं भक्तों के अटूट विश्वास और समर्पण को दर्शाती है, जिसमें वे खाटू श्याम के दरबार में ध्वजा अर्पित करने के लिए लंबी पदयात्रा करते हैं। मांगेराम सरपंच ने बताया कि श्रीश्याम खाटू मंडल द्वारा 33वीं श्रीश्याम पैदल यात्रा सवा 15 किलोग्राम की चांदी की ध्वजा के साथ भिवानी से खाटू श्रीश्याम धाम के लिए भिवानी से रवाना हुए। इससे पूर्व शहर में शोभायात्रा निकाली गई। उन्होंने बताया कि यह यात्रा करीबन 30 किलोमीटर का सफर तय करेगी तथा 8 मार्च को खाटू धाम पहुंचेगी। इस यात्रा के माध्यम से लोगों को जल एवं पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अपनाने, नशे से दूर रहने तथा अपने परिजनों का सम्मान करने के संदेश भी देगी।

भिवानी। फाल्गुन मेले के उपलक्ष्य में पैदलयात्रा निकालते श्रीश्याम खाटू मंडल के सदस्य।

भिवानी। खाटू श्रीश्याम पैदल यात्रियों के लिए शिविर का उद्घाटन करते महंत चरणदास महाराज।

खाटू श्रीश्याम धाम जाने वाले पैदल यात्रियों के लिए गोलागढ़ में लगाया पांच दिवसीय शिविर

भिवानी। राजस्थान के सीकर जिले में स्थित खाटू श्रीश्याम में होने वाले फाल्गुन मेले के लिए छोटी काशी भिवानी से पैदल यात्राएं रोजाना रवाना हो रही है, ऐसे में खाटू श्रीश्याम भक्तों की सुविधा को देखते हुए श्याम कंक्रीट प्रोडेक्ट्स गोलागढ़ द्वारा समाजसेवी संजय गोयल की अध्यक्षता में गांव गोलागढ़ में पांच दिवसीय कैंप हनुमान जोहड़ी मंदिर के महंत चरणदास महाराज के सान्निध्य में लगाया, ताकि खाटू श्रीश्याम जाने वाले पैदल यात्रियों के लिए जलपान, स्वास्थ्य व ठहरने की सुविधा मुहैया करवाई जा सकें। समाजसेवी संजय गोयल ने बताया कि फाल्गुन मेले में बाबा श्याम के दर्शन के लिए छोटी काशी भिवानी से हजारों पैदल यात्री रवाना होते है, ऐसे में उनके पांच दिवसीय शिविर का उद्देश्य श्रद्धालुओं की सेवा करना है। शिविर में श्रद्धालुओं के लिए जलपान, प्राथमिक उपचार तथा ठहरने की व्यवस्था की गई है, ताकि श्याम भक्तों को किसी प्रकार की परेशानी ना उठानी पड़े। महंत चरणदास ने कहा कि छोटी काशी के लोग धर्म-कर्म के कार्यों में विशेष रूचि रखते है। खाटू श्रीश्याम पैदल यात्रियों के लिए ऐसे कैंप न केवल भौतिक सुविधाएं प्रदान करते है, बल्कि श्रद्धालुओं की यात्रा को भी सुरक्षित,

भिवानी। खाटू नगरी श्रीश्याम धाम के लिए रवाना होते श्रीश्याम भक्त।

श्रीश्याम भक्त पदयात्री खाटू के लिए रवाना

- गाजे-बाजे के साथ गुलाल व पुष्प उड़ाते हुए नाचते-गाते शहर में शोभायात्रा निकाली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

छोटी कांशी भिवानी नगरी में फाल्गुन आते ही श्रीश्याम भक्तों ने श्याम ध्वज तैयार कर बाबा श्रीश्याम की नगर खाटू धाम जाने की तैयारियां कर ली। भिवानी के श्रीश्याम खाटू मण्डल के श्याम भक्तों की टोली सैंकड़ों की तादाद में श्याम ध्वज व मोर छड़ी लेकर भगत मांगेराम की अगुवाई में गाजे-बाजे के साथ गुलाल व पुष्प उड़ाते हुए नाचते-गाते शहर में शोभायात्रा निकाली।

शोभायात्रा में श्याम जयघोष करते हुए डॉ. भण्डारी की कोठी के समीप पहुंचने पर शहर की सामाजिक एवं धार्मिक संस्था श्रीश्याम प्रीत मण्डल ट्रस्ट द्वारा श्याम भक्तों के जत्थे का माल्यार्पण व पुष्प वर्षा कर स्वागत सत्कार किया। अश्वनी कुमार ने बताया कि पूरे भारत वर्ष से फाल्गुन मेले हेतु श्याम भक्तों की टोलियां श्याम ध्वज लेकर 10 से 15 दिनों तक की पदयात्रा करते हुए राजस्थान में रींगस से 18 किलोमीटर दूर खाटू नगरी में फाल्गुन माह की ग्यारस को पहुंचते है और श्याम ध्वज मंदिर में चढ़ाकर पूजा अर्चना कर देश एवं समाज में अमन-शांति के लिए प्रार्थना करते हैं। प्रसाद वितरण करते हुए सभी भक्तों ने श्रीश्याम प्रभु पदयात्रियों की मंगल कामनाएं देते हुए रवाना किया। इस अवसर पर पीडी शर्मा, गौरव, राजीव, काशीनाथ, रमेश, सोनू मित्तल व पीनू हलवासिया आदि मौजूद थे।

डीजे बजाने पर प्रतिबंध लगाने को लेकर मंथन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

- युवाओं में फैल रही नशे की आदत में सुधार को पंचायतों और प्रशासन को भेजे प्रस्ताव
- आठों गांवों में ठेके बंद करने की उठाई मांग
- एक गोत्र में न किए जावें

शनिवार को सर्वजातीय अठगामा खाप घसौला की कार्यकारिणी की बैठक खाप प्रधान रणबीर सिंह की अध्यक्षता में गांव पातुवास में सुबह 11 बजे तथा महराणा में साढ़े 12 बजे दोनों गांवों की पंचायत व आमजन के साथ मिलकर हुई, जिसमें समाज में फैली कुरीतियों व बुराइयों के खिलाफ धन्यवादी दौरे के दौरान विचार विमर्श किया।

बैठक में दोनों गांवों से सुझाव आए कि सबसे पहले डीजे बजाने पर प्रतिबंध व युवाओं में फैल रही नशे की आदत व शराब के ठेकों को आठों गांवों में बंद करने के लिए पंचायतों द्वारा प्रशासन को प्रस्ताव भेजे जावे। इसके बाद गांवों में अवैध शराब या नशे की चीज बिकती है तो प्रशासन को सूचित किया जावे। गांवों में युवाओं की कमेटी बनाई जाए जो खाप का इन कार्यों में सहयोग करेगी। समाज अवैध रिश्ते, लिव-इन-रिलेशनशिप या गुहांड़ व एक गोत्र में न किए जावे तथा माता-पिता की सहमति ली जावे। खाप के संगठन को मजबूत बनाने के लिए आर्थिक सहयोग दिया जाए। गांव की अन्य सामूहिक समस्याओं में खाप पंचायतों व गांवों के साथ सहयोग करने का प्रयास करेगी। इन बैठकों में प्रधान रणबीर सिंह, सचिव करतार सिंह, कोषाध्यक्ष राजबीरसिंह, संरक्षक धर्मपाल, प्रेस प्रवक्ता राजीव यादव ने अपने विचार रखें। इसके अतिरिक्त सरपंच गुणपाल, दलजीत, कृष्ण कुमार, अजीत सिंह, संजय, ब्रह्मप्रकाश, बलवान, रिंकू, अभिषेक, दीपक, अतरसिंह, जोगेन्द्र, पूर्व सरपंच जले सिंह, जोरा सिंह, इन्द्र सिंह, माडू राम, जागेराम, पातुवास गांव से भाग लिया। वहीं राजेश, विनोद, जगदीश गोठड़ा आदि मौजूद रहे।

कम से कम 20 ग्रेस मार्क्स दिए जाएँ : राम अवतार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- दसवीं कक्षा की परीक्षाओं में मैथ (गणित) के पेपर में हुई त्रुटियों को लेकर की मांग

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी की दसवीं कक्षा की परीक्षाओं में मैथ (गणित) के पेपर में हुई त्रुटियों के लिए प्राइवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा मांग करता है कि सभी बच्चों को कम से कम 20 ग्रेस मार्क्स दिए जाए। एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष रामअवतार शर्मा ने कहा कि दसवी कक्षा का मैथ का पेपर बहुत ही मुश्किल था,इसमें करीब तीस नम्बरों का पेपर सिलबस से बाहर का था।

पेपर के बाद सभी स्कूल संचालकों, अध्यापकों, बच्चों और उनके पेरेंट्स में भारी रोष है. . साथ ही, यह पेपर हरियाणा बोर्ड द्वारा समय समय पर जारी की जाने वाले सैंपल पेपर्स और ब्लू प्रिंट से भी मैच नहीं करता. सभी बच्चे बोर्ड द्वारा जारी किये जाने वाले सैंपल पेपर्स को देख कर ही पेपर पैटर्न का अंदाज़ा लगाते हैं और उसी हिसाब से तैयारी करते हैं. लेकिन इस बार जैसे ही मैथ का पेपर बच्चों के हाथ में आया सबके होश उड़ गए। परीक्षा के बाद जब बच्चे बाहर आये तो उन्होंने सारी कहानी बताई. एसोसिएशन ने पेपर मैथ के टीचर्स से चेक करवाया तो उन्होंने ने भी इसे बहुत मुश्किल बताया। टीचर्स ने कहा कि करीब 30 नम्बर के प्रश्न एनसीईआरटी की किताबों में से नहीं हैं, जबकि हरियाणा बोर्ड की गाइड लाइन कहती है कि बच्चों को एनसीईआरटी सिलेबस पढ़ाया जाए और उसी में से पेपर भी बनाया जाए। रामअवतार शर्मा ने कहा कि बोर्ड के पेपर बनाने के नियमों के हिसाब से भी 100 में से कम से कम 50 प्रतिशत पेपर का डिफिकल्टी लेवल आसान होना चाहिए, 30 प्रतिशत पेपर ऐसा होना चाहिए जो साधारण बच्चा भी कर ले, और 20 प्रतिशत का डिफिकल्टी लेवल ऐसा होना चाहिए जो होशियार बच्चा कर ले. लेकिन इस पेपर का डिफिकल्टी लेवल इतना है कि और इस पेपर में होशियार से होशियार बच्चा भी 70 परसेंट से ज्यादा नंबर नहीं ला पायेगा। रामअवतार शर्मा ने कहा कि 80 मार्क्स में से 30 मार्क्स का पेपर तो आउट ऑफ़ सिलेबस ही है।

पूर्व मंत्री ने सिंचाई मंत्री से मांगा नहरी पानी

बहल। गर्मी के महीनों में बहल क्षेत्र के गांवों में पेयजल की समस्या को लेकर प्रदेश के पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने अपनी ही पार्टी की सिंचाई मंत्री को एक्स पर पोस्ट किया है। उन्होंने संभावित गर्मी के मौसम को देखते हुए बहल क्षेत्र की नहरों में पानी उपलब्ध करवाने की मांग की है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पोस्ट कर पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने बहल क्षेत्र के करीब आधा दर्जन गांवों में बन रहे पेयजल संकट को लेकर इस क्षेत्र की नहरों में पानी देने की अपील की है। पूर्व कृषि मंत्री की यह पोस्ट सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही है। लोगों के इस पर खूब कमेंट भी आ रहे हैं। कृषि मंत्री की यह पोस्ट शनिवार को आई है। करीब छह घंटे में इसे 1200 से ज्यादा लोग देख चुके है। इसमें उन्होंने सीएमओ को भी टैग किया है। पोस्ट में पूर्व मंत्री ने सिंचाई मंत्री से नहरों में पानी की पर्याप्त पूर्ति की मांग करते हुए लिखा है कि लोहारू हलके के गांव बैराण, नूनसर, बिधनोई, गोकुलपुरा, कासनी, सिरसी, चैहड़ कलां, सुरपुरा कलां व बहल के जलघरों में पानी नहीं है। सिंचाई मंत्री से निवेदन है कि नहरों में पानी छुड़वाया जाए, जिससे जलापूर्ति हो और गांवों में पानी की समस्या का निदान हो सके। अब पूर्व कृषि मंत्री की इस अपील पर सिंचाई मंत्री कितना गौर करती है यह तो आगे की बात है, लेकिन यह पोस्ट खूब चर्चा में है। बहल क्षेत्र में अधिकतर नहरों की टेल ही लगती है। टेल तक पानी की हमेशा ही कमी रहती है। खासकर गर्मी के मौसम में तो टेल लगभग सूखी पड़ी रहती है। पांच साल में तो पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने लगातार निगरानी रखते हुए पानी पहुंचाने का प्रयास किया था।

खनन क्षेत्र का अधिकारियों ने किया औचक निरीक्षण, जांच कर छह वाहन किए जब्त

टीम ने 432 खनिज वाहनों का विभिन्न स्थानों पर निरीक्षण किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

- अधिकारियों ने माइनिंग जॉन से सामग्री भरने वाले वाहनों की गहनता से जांच की, वहीं शनिवार को माइनिंग जॉन का औचक निरीक्षण किया। औचक निरीक्षण में अवैध खनन करते हुए छह वाहनों को जब्त किया है।

दादरी में अवैध माइनिंग को लेकर जिला प्रशासन और विभाग पूरी तरह अलर्ट हो गया है। शुक्रवार को अधिकारियों ने माइनिंग जॉन से सामग्री भरने वाले वाहनों की गहनता से जांच की, वहीं शनिवार को माइनिंग जॉन का औचक निरीक्षण किया। औचक निरीक्षण में अवैध खनन करते हुए छह वाहनों को जब्त किया है। जिले के खनन स्थलों का खान विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की टीम ने 24 घंटो में 432 खनिज वाहनों का विभिन्न स्थानों पर निरीक्षण किया। इस टीम में राज्य भू वैज्ञानिक विभाग से दीपक हुड्डा, सहायक खनन अभियंता राजेश सांगवान, खनन अधिकारी ओमदत्त और मोहित सर्वेयर शामिल रहे। खनन अधिकारी ने बताया कि विभाग के महानिदेशक के एम पांडुरंग के दिशा निर्देशों पर देर रात से अलसुबह तक चली कार्रवाई में अवैध खनन व अवैध परिवहन छह वाहन खनिज के पकड़े गए है। टीम ने 24 घंटो में 432 खनिज वाहनों का विभिन्न स्थानों पर निरीक्षण किया। दीपक हुड्डा ने बताया कि अब तक की गई कार्रवाई में सामने आया है कि कुछ क्रेशर मालिकों व खनन ठेकेदारों द्वारा अनियमिताएं बरती जा रही हैं, जिनकी विस्तृत लिखित रिपोर्ट महानिदेशक को दी जाएगी और आगामी नियमानुसार कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने बताया कि निरीक्षण की कार्रवाई लगातार जारी रहेगी ।

विज्ञान पावर प्वाइंट में छवि व शबनम ने जीता प्रथम स्थान

भिवानी। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर महानिदेशक उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के निर्देशानुसार बनवारीलाल जिंदल सुईवाला कॉलेज तोशाम के तत्वावधान में राज्य स्तरीय अंतः महाविद्यालय विज्ञान पावर प्वाइंट संगोष्ठी का आयोजन बनवारीलाल जिंदल सुईवाला कॉलेज तोशाम में आयोजित किया। राज्य स्तरीय अंतः महाविद्यालय विज्ञान पावर प्वाइंट संगोष्ठी में विभिन्न महाविद्यालयों की अनेक टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में वैश्य महाविद्यालय भिवानी की छवि व शबनम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। छात्राओं ने प्राचार्य डॉ. संजय गोयल के नेतृत्व एवं वनस्पति विभागाध्यक्ष डॉ. मोहन लाल के संयोजन में प्रतियोगिता में भाग लेकर सफलता हासिल की।

छात्राओं की टीम के साथ प्राध्यापिका अंजू व दीप्ति भी पर्यवेक्षक के रूप में शामिल रही। छात्राओं छवि व शबनम की सफलता पर वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट व वैश्य महाविद्यालय प्रबन्धक समिति के पदाधिकारियों ने उन्हें बधाई दी। प्राचार्य डॉ. संजय ने छात्राओं की सफलता पर उन्हें सम्मानित किया।

साइबर अपराधियों का शिकार होने से बचा सकती जागरूकता: सुखविन्द्र कौर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

- न्यायमूर्ति ने कोर्ट परिसर का किया निरीक्षण, जांची सुविधाएं

पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति सुखविन्द्र कौर ने कहा कि साइबर फ्रॉड के प्रति जागरूकता समय की मांग है। देश में प्रतिदिन लाखों लोग ऐसे फ्रॉड का शिकार होते हैं। केवल जागरूकता से ही साइबर अपराधियों का शिकार होने से बचा जा सकता है।

न्यायमूर्ति सुखविन्द्र कौर शनिवार को दादरी के न्यायिक परिसर में वार्षिक निरीक्षण के लिए पहुंची थी। उन्होंने जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की ओर से साइबर फ्रॉड को लेकर तैयार मुहिम का शुभारंभ किया और परिसर में पार्क उद्घाटन कर पौधरोपण भी किया। कार्यक्रम के दौरान साइबर फ्रॉड को लेकर जागरूकता नाटक दिखाने वाले कलाकारों का हौसला बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि साइबर फ्रॉड आज का ज्वलंत मुद्दा है और इसको लेकर जागरूकता आज के समय की मांग भी है। डीएलएसए की ओर से की गई यह शुरूआत लोगों में जागरूकता लाने के लिए अहम साबित होगी। जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के चेयरमैन नरेश कुमार ने बताया कि सावधान रहें, सुरक्षित रहें, अपने साइबर स्पेस की सुरक्षा करें थीम को लेकर आज की गई शुरूआत के माध्यम से जिला के लोगों का जागरूक किया जाएगा। साइबर अपराध दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। इस दौरान अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश जसबीरसिंह कुंडू, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. कविता कंबोज, मीनाक्षी यादव एसीजेएम, संजीव काजला, सीजेएम-सह-सचिव डीएलएसए, निधि सोलंकी सीजेएम, धर्मपाल जेएमआइसी, लक्ष्य गर्ग जेएमआईसी, रजत अरोड़ा जेएमआइसी और मयंक गुप्ता जेएमआइसी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता में दिखाया दमखम

हन्नी और हर्ष ने गोल्ड और सिल्वर पदक जीता

- भिवानी के युवा अब अन्य खेलों में भी अपनी पहचान बना रहे हैं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

विश्वभर में मुक्केबाजी व कुश्ती के लिए जाने जाने वाले भिवानी के युवा अब अन्य खेलों में भी अपनी पहचान स्थापित कर खेल नगर भिवानी का नाम राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रोशन कर रहे है। इसी कड़ी में बाग कोठी निवासी जुड़वा भाई हन्नी व हर्ष ने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में गोल्ड व अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में सिल्वर पदक अपनी टीम को दिलाने में अहम भूमिका निभाकर खेल नगरी भिवानी को गौरवांवित करने का काम किया है। अधिवक्ता प्रिया लेघां ने बताया कि बीते दिनों जयपुर में स्कूल स्पोर्ट्स एजुकेशन एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा राष्ट्रीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन करवाया, जिसमें हरियाणा की टीम ने स्वर्ण पदक हासिल किया था। हरियाणा की टीम को जीत दिलाने में भिवानी के जुड़वा भाई हन्नी व हर्ष की अहम भूमिका रही। इसके अलावा 21 से 24 फरवरी तक इंटरनेशनल स्कूल स्पोर्ट्स एजुकेशन एसोसिएशन द्वारा नेपाल में आयोजित करवाई अंतर्राष्ट्रीय वॉलीबॉल प्रतियागिता में भी भारत की टीम की तरफ से खेलते हुए हन्नी व हर्ष ने सिल्वर पदक देश की टीम को दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

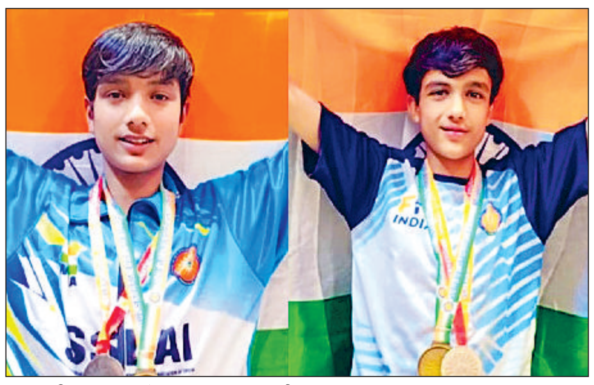
भिवानी। पदक विजेता जुड़वा भाई हन्नी व हर्ष।

सफलता का श्रेय माता-पिता को दिया

अधिवक्ता प्रिया ने बताया कि दोनों भाई बाल भवन स्कूल में 11वीं कक्षा के विद्यार्थी है तथा खेल प्रतिभा के दम पर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छाए हुए है। उन्होंने कहा कि भिवानी के खिलाड़ियों ने समय-समय पर अपने खेल प्रतिभा के दम पर भिवानी को गौरवांवित करने का काम किया है, जो अन्य युवाओं को भी खेलों की तरफ आकर्षित करने का काम करती है। इस मौके पर खिलाड़ी हर्ष व हन्नी ने अपनी सफलता का श्रेय पिता नरेश व माता कुसुम को दिया।

खबर संक्षेप

किसानों पर कहर बन कर बरसी ओलावृष्टि

भिवानी। भिवानी जिला के कुछ क्षेत्रों सहित प्रदेश भर के विभिन्न क्षेत्रों में हुई ओलावृष्टि किसानों पर एक बार फिर से कहर बन कर बरसी है। ओलावृष्टि के कारण किसानों की गेहूं, सरसो व सब्जी की फसल पूरी तरह से बर्बाद हो गई है तथा फसल बर्बादी के साथ ही किसान भी बर्बादी की कगार पर पहुंच गए है। इसीलिए सरकार को चाहिए कि वे किसानों की हालत सुधारने के लिए जल्द से जल्द विशेष गिरदावरी करवाकर उन्हे उचित मुआवजा दे, ताकि किसानों को थोड़ी राहत मिल सकें। यह मांग ग्राम स्वराज्य किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष जोगेंद्र तालु ने प्रदेश सरकार से की। उन्होंने कहा कि आज देश का अन्नदाता हर तरफ से समस्याओं से घिरा हुआ है। उसके बाद ओलावृष्टि ने किसानों की समस्याएं और बढ़ा दी है। तालु ने कहा कि ओलावृष्टि से किसानों की फसल पूरी तरह बर्बाद हो चुकी है तथा मौसम की मार से त्रस्त किसान अब फसल में लगी लागत निकालने को भी तरस रहे हैं। अन्नदाताओं ने सरकार से फसल को हुए नुकसान का आंकलन कर मुआवजा दिए जाने की गुहार लगाई हैं।

लोहारू और आसपास के इलाके में तेज अंधड़ के साथ गिरे ओले

ग्रामीण इलाकों में बिजली के खंभे उखड़े, फसलें बिछी

■ लोहारू में तेज आंधी से कई पेड़ और बिजली के खंभे उखड़े

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भिवानी/लोहारू

मौसम विभाग के पूर्वानुमान अनुसार रात को लोहारू और आसपास के इलाके में तेज अंधड़ के साथ जमकर बरसात हुई तथा कई गांवों में 15 से 20 मिनट तक ओलावृष्टि भी हुई। तेज अंधड़ के कारण जहां ग्रामीण इलाकों में कई पेड़ और बिजली के खंभे उखड़ गए वहीं खेतों में किसान की फसलें जमीन पर पसर गई। इसके अलावा दमकोरा, बरालु, झांझड़ा, गिगनाऊ गोठड़ा, ढाणी टोडा, झुप्पा कलां व खुर्द, सेहर, पहाड़ी, नकीपुर, बसीरवास, बारवास, ढाणी रहीमपुर, सुखदेव सिंह का बास सहित अनेक गांवों में हुई ओलावृष्टि से किसानों की फसले प्रभावित हो गई। पीड़ित किसानों ने प्रशासन और सरकार से विशेष गिरदावरी कराके बर्बाद फसल का मुआवजा दिए जाने की मांग की है।

लोहारू। बीती रात लोहारू ग्रामीण क्षेत्र में तेज अंधड़ से टूटा पड़ा बिजली का खंभ व बारिश के साथ आई तेज हवा से जमीन पर बिछी फसलें।

अचानक मौसम ने करवट ली। जिससे तेज हवाओं के साथ बरसात का दौर शुरू हो गया तथा तेज हवाओं ने अंधड़ का रूप ले लिया। तेज अंधड़ के कारण आस पास के गांवों में अनेक पेड़ जमींदोज हो गए तथा बिजली के खंभे भी उखड़ गए। बिजली के खंभे टूटने के कारण गांवों के साथ साथ शहरों में भी बिजली आपूर्ति ठप्प हो गई। शनिवार को बिजली आपूर्ति बहाल हो सकी। तेज अंधड़ के साथ हुई ओलावृष्टि ने क्षेत्र में रबी सीजन की फसल को काफी प्रभावित किया है। दमकोरा, बरालु, गोठड़ा, झांझड़ा, झुप्पा व बसीरवास आदि गांवों के किसानों का कहना है कि ओलावृष्टि ने उनकी सरसों और गेहूं की फसल को चौपट कर दिया है। सरकार को विशेष गिरदावरी कराके फसलों पीड़ित किसानों को इसका मुआवजा देना चाहिए।

किसान सभा ने मुआवजे की मांग को लेकर सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भिवानी

अखिल भारतीय किसान सभा जिला कमेटी भिवानी ने लोहारू क्षेत्र में एक दर्जन से अधिक गांव में 28 फरवरी को हुई भंयकर ओलावृष्टि से बर्बाद गेहूं, सरसों व सब्जियों की फसल की विशेष गिरदावरी व 50 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजे की मांग को लेकर जिला उपायुक्त भिवानी के माध्यम से राज्य के मुख्यमन्त्री नायब सिंह सैनी को ज्ञापन भिजवाया है।

जिला उपायुक्त की तरफ से ज्ञापन लेने के लिए डीआरओ साहब आए थे। ज्ञापन देने आए किसान सभा के प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किसान सभा के जिला प्रधान रामफल देशवाल, उपप्रधान कामरेड ओम प्रकाश कर रहे थे, उन्होंने कहा कि 28 फरवरी को लोहारु क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक गांव में भंयकर ओलावृष्टि हुई है जिनमें गोठड़ा, ढाणी टोडा, ढ़ाणी मनसुख, बसीरवास, बारवास, झुप्पा कला, खुर्द, गिगनाऊ, झांझड़ा, हसनपुर स्योराण, दमकोरा, बरालू, लालपुर ढ़ाणी व सेहर शामिल हैं। उन्होंने मुख्य मन्त्री से अपील की है कि उपरोक्त प्रभावित किसानों की बर्बाद फसलों की विशेष गिरदावरी करवाई जाए तथा 50 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा दिलवाया जाए।

इस अवसर पर किसान नेता करतार ग्रेवाल, प्रताप सिंह सिंहमार, महाबीर फोजी, धन सिंह ग्रेवाल, सोनू प्रजापति शामिल थे।

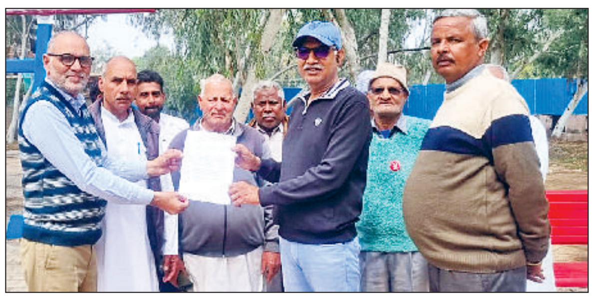

भिवानी। मुआवजे की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

किसान संगठनों ने ओलावृष्टि से हुए नुकसान का मुआवजा मांगा

लोहारू। बीती रात इलाके के विभिन्न गांवों में ओलावृष्टि से प्रभावित हुई फसलों के नुकसान का मुआवजा देने की मांग को लेकर शनिवार को अखिल भारतीय किसान यूनियन और किसान मजदूर शोषण मुक्ति मोर्चा के पदाधिकारियों ने बैठक की और प्रदेश सरकार से मुआवजे की मांग की। भाकियू के ब्लाक प्रधान रवींद्र कसवां, जिला प्रधान मेवा सिंह आर्य, आजाद सिंह ने कहा कि ओलावृष्टि से किसानों की गेहू सरसों आदि और सब्जी वर्गीय फसलें पूरी तरह बर्बाद हो गई है। बाद में उन्होंने अपनी मांगों को लेकर सरकार के नाम ज्ञापन भी प्रेषित किया। इस मौके पर ईश्वर, धर्मपाल राठी, मुख्तार, राजपाल, सुमेर सिंह गोठड़ा, कमल सिंह, दयानन्द मास्टर, रमेश दमकौरा, जयसिंह, सुमेर सिंह आदि मौजूद रहे। पृथ्वी सिंह गोठड़ा, रोहताश झुप्पा ने कहा कि ओलावृष्टि ने किसानों की कमर तोड़ दी है। सरकार को बर्बाद फसल की विशेष गिरदावरी करानी चाहिए।

भिवानी। स्कूल का निरीक्षण करते जिला शिक्षा अधिकारी कृष्णा फौगाट।

मुख्यमंत्री सौंदर्यीकरण प्रोत्साहन पुरस्कार योजना में जावा विद्यालय ने मारी बाजी

चरखी दादरी। मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के तहत गांव जावा स्थित राजकीय वमा विद्यालय ने जिला स्तर पर प्रथम स्थान हासिल किया है। प्राचार्य नरपाल यादव ने बताया कि सीटीएम दादरी जितेंद्र कुमार, डीईओ कृष्णा फोगाट, डीएफओ की अगुवाई में टीम ने जिले के बाढडा, बौंद, दादरी खंडों में प्रथम स्थान पाने वाले राजकीय विद्यालयों का निरीक्षण हाल ही में किया था। उन्होंने स्कूल में उपलब्ध संसाधनों, स्वच्छता, सुंदरता में अंकों के आधार पर विद्यालय को प्रथम स्थान पर घोषित किया। टीम ने विद्यालय के मिड डे मिल रसोई, विज्ञान प्रयोगशालाएं, लेग्वेंज लैब, पुस्तकालय, गणित लैब, शौचालयों, कक्षा कक्षों तथा समस्त परिसर का निरीक्षण किया और स्टाफ वे अध्ययन व अध्यापन संबंधी विषयों पर विस्तार से वार्ता की। प्राचार्य ने बताया कि यह स्पर्धा हर साल राजकीय विद्यालयों में खंड व जिला स्तर पर आयोजित होती है। खंड स्तर पर 50 हजार की इनाम राशि विद्यालय को मिलती है। इस अवसर पर सरपंच प्रेम चारण सहित स्कूल प्रबंधन समिति व विद्यालय परिवार को शुभकामनाएं दी।

किसान सभा ने गिरदावरी की उठाई मांग

■ बीता रात ओलावृष्टि से फसलों में हुआ भारी नुकसान

हरिभूमि न्यूज ▸▸ चरखी दादरी

किसान सभा की बैठक जिला प्रधान रणधीर सिंह कुंगड़ की अध्यक्षता में एसकेएस कार्यालय में हुई। बैठक में बीती रात हुई ओलावृष्टि से नुकसान की भरपाई और किसानों की अन्य समस्याओं को पर चर्चा की गई। जिला प्रधान रणधीर सिंह कूंगड व वरिष्ठ सदस्य राजकुमार घिकाड़ा व कमलेश भैरवी ने कहा कि बीती रात जिले के कई गांवों में भारी ओलावृष्टि से फसलों में नुकसान हुआ है। इस आसमानी आफत के कारण किसानों की कमर टूट गई है।

ओलावृष्टि से गेंहू, सरसों, चना व सब्जियों आदि की फसलें पूरी तरह से तबाह हो गई है। किसान सभा ने मांग करते हुए कहा कि तुरंत प्रभाव से गिरदावरी करवाई जाए और किसानों को उचित मुआवजा दिया जाए। जिससे किसान आगामी फसल के लिए समय रहते तैयारी कर सके। किसानों के बकाया मुआवजा दादरी जिले में फसल बीमा के बकाया 150 करोड़ रुपये को तुरंत जारी करने की मांग रखी गई। बैठक में सचिव नरेंद्र झींझर, ओम नंबरदार चरखी, सुरेंद्र मोठसरा रावलधी, धर्मबीर सिंह इमलोटा, फतेह सिंह चिडिया, दलबीर रासीवास आदि ने विचार रखे।

भिवानी। गिरदावरी की मांग करते किसान सभा पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

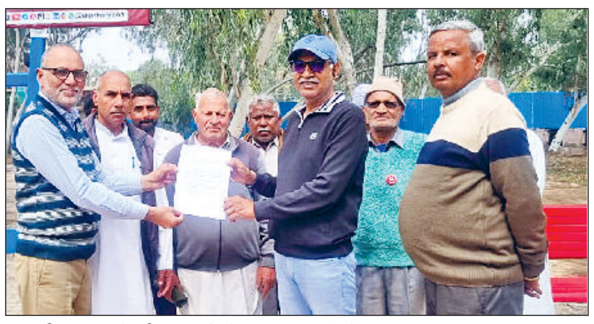

भिवानी। मुआवजे की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

किसान सभा ने मुआवजे की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा

भिवानी। अखिल भारतीय किसान सभा जिला कमेटी भिवानी ने लोहारू क्षेत्र में एक दर्जन से अधिक गांव में 28 फरवरी को हुई भंयकर ओलावृष्टि से बर्बाद गेहू, सरसों व सब्जियों की फसल की विशेष गिरदावरी व 50 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजे की मांग को लेकर जिला उपायुक्त भिवानी के माध्यम से राज्य के मुख्यमन्त्री नायब सिंह सैनी को ज्ञापन भिजवाया है। ज्ञापन देने आए किसान सभा के प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किसान सभा के जिला प्रधान रामफल देशवाल, उपप्रधान कामरेड ओम प्रकाश कर रहे थे, उन्होंने कहा कि 28 फरवरी को लोहारु क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक गांव में भंयकर ओलावृष्टि हुई है जिनमें गोठड़ा, ढाणी टोडा, ढ़ाणी मनसुख, बसीरवास, बारवास, झुप्पा कला, खुर्द, गिगनाऊ, झांझड़ा, हसनपुर स्योराण, दमकोरा, बरालू, लालपुर ढ़ाणी व सेहर शामिल हैं। उन्होंने मुख्य मन्त्री से अपील की है कि उपरोक्त प्रभावित किसानों की बर्बाद फसलों की विशेष गिरदावरी करवाई जाए तथा 50 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा दिलवाया जाए। इस अवसर पर किसान नेता करतार ग्रेवाल, प्रताप सिंह सिंहमार, महाबीर फोजी, धन सिंह ग्रेवाल, सोनू प्रजापति शामिल थे।

आईसीटी व गणित विभाग का डेटा विज्ञान पर विस्तार व्याख्यान का किया आयोजन

■ व्याख्यान में बतौर वक्ता रेवती अतुल गांधी ने शिरकत की, जो शिकागो, अमेरिका में डेटा वैज्ञानिक हैं

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भिवानी

चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय के आईसीटी विभाग और गणित विभाग द्वारा कुलपति प्रोफेसर दीप्ति धर्माणी के कुशल नेतृत्व एवं कुलसचिव डॉ. भावना शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में डेटा विज्ञान विषय पर विस्तार व्याख्यान आयोजित किया। गणित और आईसीटी विभाग के शिक्षण संकायों और छात्रों ने व्याख्यान में भाग लिया।

व्याख्यान में बतौर वक्ता रेवती अतुल गांधी ने शिरकत की,जो शिकागो, अमेरिका में डेटा वैज्ञानिक हैं। व्याख्यान की शुरुआत में गणित विभाग के अध्यक्ष और आईसीटी के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर दिनेश कुमार मदान ने रेवती का स्वागत किया और छात्रों से उनका परिचय करवाया। वक्ता रेवती ने कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकियों और रुझानों के बारे में चर्चा की। उन्होंने छात्रों को इस बारे में मार्गदर्शन दिया कि वे अपने बायोडाटा में वास्तविक दुनिया का प्रोजेक्ट रखकर अपने पोर्टफोलियो को कैसे बेहतर बना सकते हैं। उन्होंने छात्रों के कौशल विकास पर भी बल दिया और वास्तविक दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा विज्ञान के महत्व पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने चैटजीपीटी, क्लाउड कंप्यूटिंग, हगिंग फेस, ट्रांसफर मॉडल आदि विषय के बारे में बताया। उन्होंने छात्रों को यह भी बताया कि एआई ने वर्तमान दुनिया में कैसे क्रांति ला दी है।

भिवानी। डेटा विज्ञान पर विस्तार व्याख्यान देती वक्ता।

व्याख्यान में लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। अंत में छात्रों ने वक्ता के साथ बातचीत की और अपने प्रश्न पूछे। सेमिनार में डॉ. विनोद कुमार, डॉ. अगिन कुमारी, डॉ. हेमंत वर्मा, साहिल कुकरेजा, रितु, गोयल सहित अनेक शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कर्मचारियों ने भाग लिया।

जेसीआई के सदस्यों ने नंदीशाला में गोसेवा कर मनाई शादी की वर्षगांठ

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भिवानी

आज की चकाचौंध व दिखावे से भरी दुनिया में लोग अपने जीवन से जुड़ी खुशियां मनाने के लिए बड़े-बड़े होटलों का रूख करते है, वहीं समाज मे कुछ लोग ऐसे भी है जो इन खुशियों को एक प्रेरणादायी संदेश के रूप में मनाते है, ताकि युवा पीढ़ी के मन में अपनी संस्कृति एवं संस्कारों के प्रति सम्मान के भाव पैदा किया जा सकें। इसी कड़ी में जेसीआई भिवानी डायमंड के सदस्य जेसी सुनील बंसल ने अपनी शादी की 25वीं सालगिरह, जेसी प्रदीप बंसल व जेसी अंशुल लोहिया ने अपनी शादी की सालगिरह गौसेवा कर मनाई।

नंदीशाला सेवा दल के प्रधान दिवाकर जैन ने बताया कि हालुवास गेट स्थित गौशाला में गौवंश को हरा चारा, दलिया डालकर अपनी शादी की सालगिरह की खुशियां मनाई। सेवा दल ने इस सराहनीय सोच के लिए जेसीआई भिवानी डायमंड के अध्यक्ष दिनेश गोयल को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। अमित बंसल मुंढ़ालिया ने कहा कि समाज में ऐसी सराहनीय पहल की बेहद जरूरत है, गौवंश की सेवा कर खुशियां मनाना न केवल आत्मिक संतुष्टि प्रदान करता है, बल्कि युवा पीढ़ी को भी अपनी संस्कृति से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करते है। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य युवा पीढ़ी को सामाजिक सरोकार के भाव से जोड़ना था, ताकि वे पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से बाहर निकल सकें।

भिवानी। नंदीशाला में गोवंश के लिए सवामणि लगाते जेसीआई के सदस्य।

भिवानी। रक्तदाताओं को सम्मानित करते अतिथि। फोटो : हरिभूमि

शिविर में 14 युवाओं ने किया रक्तदान

भिवानी। नवदुर्गा सेवा सहयोग संस्था के संस्थापक सुरेश सैनी के 50वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में संस्था ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस अवसर पर मुख्यतिथि के रूप में हरियाणा योग आयोग के सदस्य डॉ. मदन मानव उपस्थित रहे। वहीं विशिष्ट अतिथि ब्लड बैंक इंचार्ज डॉ. मोनिका सांगवान, पर्यावरण रक्षक जेई बिजेश जावला और पार्षद विनोद प्रजापति ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। शिविर में 14 युवाओं ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया। मुख्यतिथि डॉ. मदन व डॉ. मोनिका ने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्तदान से न केवल जरूरतमंदों की जान बचाई जा सकती है, बल्कि रक्तदाता के स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक होता है। उन्होंने बताया कि आपका एक यूनिट रक्त कई जरूरतमंद मरीजों की जान बचा सकता है। विशिष्ट अतिथि जेई बिजेश जावला और पार्षद विनोद प्रजापति ने रक्तदाताओं का हौंसला बढ़ाया और उन्हें सम्मानित किया। संस्था के संस्थापक सुरेश सैनी ने सभी रक्तदाताओं, अतिथियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सुनील सैनी, राजसिंह, अमित शर्मा, सुरेश कुमार सैनी, सूर्य सतपाल रवि रवि, अमित सोनी, सुन्दर सिंह, पायल, शीतल, अंकित व शाहिद आदि उपस्थित थे।

विरोध एनएसयूआई ने शिक्षा बोर्ड पर लगाया नकल व पेपर लीक रोकने में असफल होने का आरोप

शिक्षा बोर्ड द्वारा नकल रहित परीक्षा संचालन के किए जाते हैं बड़े -बड़े दावे

नकल और पेपर लीक के विरोध में एनएसयूआई ने फूंका शिक्षा बोर्ड प्रशासन का पुतला, जताया विरोध

■ लाख दावों के बावजूद बोर्ड परीक्षाओं में रोजाना आ रहे नकल के मामले : लांग्यान

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भिवानी

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा नकल रहित परीक्षा संचालन के लाख दावे किए जाते है तथा लाखों रुपये खर्च कर रोजाना नए-नए एक्सपेरीमेंट कर नकल रहित परीक्षा संचालन की बात कही जाती है, लेकिन जमीनी हकीकत पर देखा जाए तो हर बार हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की वार्षिक परीक्षाओं में रोजाना नकल व पेपर लीक के अनेक मामले सामने आते है, जो पूरी तरह से शिक्षा बोर्ड की विफलता को दर्शाता है, जिसके विरोध में एनएसयूआई के अध्यक्ष वरूण चौधरी के निर्देशानुसार व एनएसयूआई प्रदेश अध्यक्ष अविनाश यादव के नेतृत्व में एनएसयूआई जिला इकाई ने तोशाम में बोर्ड प्रशासन का पुतला फूंककर विरोध जताया।

शिक्षा बोर्ड प्रशासन का पुतला फूंकते एनएसयूआई के सदस्य।

दो दिनों में नकल के करीबन 150 मामले

इस मौके पर एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष मनजीत लांग्यान ने कहा कि इन दिनों हरियाणा विद्यालय शिक्षा की 10वीं व 12वीं की वार्षिक परीक्षाएं आयोजित करवाई जा रही है। परीक्षा के पहले दिन ही दो जिलों में पेपर लीक के मामले सामने आए थे। इसके अलावा दो दिनों में नकल के करीबन 150 मामले भी दर्ज किए गए, जो कि शिक्षा बोर्ड के दावों के आगे बहुत बड़ा आंकड़ा है। लांग्यान ने कहा कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा नकल रोकने के नाम पर लाखों रूपये खर्च किए गए, इसके बावजूद भी परिणाम जीरो ही है, जो शिक्षा बोर्ड प्रशासन की लापरवाही विफलता दर्शाता है, जिसके विरोध में एनएसयूआई ने सड़कों पर उतरकर रोष जताया है। शिक्षा बोर्ड प्रशासन को उसका कार्य याद दिलाने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि जल्द ही हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड प्रशासन ने अपनी कार्यप्रणाली में सुधार नहीं किया तो वे एनएसयूआई बड़ा आंदोलन करने पर मजबूर होगी।

जय हिन्द आयुर्वेद एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथी

भिवानी का पहला हेल्थ केयर जहां नाड़ी डिजिटल मशीन से देख कर रिपोर्ट कार्ड साथ दिया जाता है ताकि उचित इलाज किया जा सके।

- जैसे गाड़ी की सर्विस करवाते हो वैसे ही अपनी बॉडी की सर्विस करवाए ताकि बीमारी पास ही न आए।
- अपनी बीमारी को दबाए नहीं जड़ से ठीक करवाए।
- लीपोमा की गांठ बिना ऑपरेशन इलाज।
- पीत पथरी, किडनी की पथरी,पेट की सभी बीमारी का इलाज।
- शुगर का इलाज,बवासीर और भगंदर का इलाज।
- औरतों की सभी बीमारी का इलाज।
- एक ही जगह सभी थैरपी फिजियो थैरपी, नाचरोथर्पी (मिट्टी पानी से इलाज), एक्यूप्रेशर थैरपी,कप थैरपी, योगा थैरपी, और बिना किसी साइड इफेक्ट के इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सभी बीमारी का इलाज।
- सभी थेरेपी का डिप्लोमा और अनुभवी डॉक्टर द्वारा ट्रेनिंग दी जाती है।
- अपने बॉस खुद बने और बेरोजगारी से मुक्ति पाए महीने का 30/50 हजार कमाए खुद थेरेपिस्ट बने।

Dr. Krishan Singh
(Naturopath) (रिटायर्ड फौजी)
BEMS, DNYS (MD), D.Ay.A, D.ma.T, D.Ay, D.P.K., DPT

मकान न. 4, पटेल नगर, सीआईडी ऑफिस के सामने, भिवानी
सम्पर्क सूत्र: 6005452863

अपने शरीर को हेल्दी-फिट रखने के लिए अच्छी डाइट के साथ रेग्युलर एक्सरसाइज को जरूरी माना जाता है। लेकिन वैज्ञानिकों ने हाल में एक ऐसी गोली बनाने में सफलता हासिल की है, जिसे खाने से 10 किमी. दौड़ने के बराबर का एक्सरसाइज बेनिफिट मिल जाएगा। कैसी है ये कमाल की गोली, कैसे करेगी काम और किसके लिए होगी फायदेमंद, आप जरूर जानना चाहेंगे।

एक गोली खाइए फिट हो जाइए

कवर स्टोरी

डॉ. माजिद अलीम

अच्छी सेहत के लिए डॉक्टर से लेकर फिटनेस एक्सपर्ट और अनुभवी लोग भी एक ही सुझाव देते हैं-डेली एक्सरसाइज कीजिए। लेकिन अगर कोई इतना अशक्त हो कि वो हाथ-पैर हिला ही नहीं पाए तो वो क्या करे? विज्ञान ने ऐसे व्यक्ति के लिए भी अब रास्ता निकाल लिया है कि वह एक इंच हिले बिना भी अच्छे वर्कआउट का स्वास्थ्य लाभ अर्जित कर सकता है।

बना ली गई करामाती गोली

डेनमार्क देश की आरहुस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने एक पिल (गोली) विकसित की है, जो शरीर में 10 किमी. दौड़ के मेटाबॉलिक (पाचन) प्रभाव जितना असर पैदा कर सकती है, वह भी बिना पसीना बहाए। 'पफ एग्रीकल्चर एंड फूड केमिस्ट्री' नामक जर्नल में इस शोध उपलब्धि को प्रकाशित किया गया है। इसके मुख्य शोधकर्ता और केमिस्ट डॉ. थॉमस पौल्सेन ने बताया, 'हमने एक मॉलिक्यूल विकसित किया है, जो शरीर में कड़ी एक्सरसाइज और फास्टिंग (व्रत) की मेटाबॉलिक प्रतिक्रिया की नकल उत्पन्न कर सकती है। यह मॉलिक्यूल शरीर को उस मेटाबॉलिक अवस्था में ले आता है, जो कि खाली पेट तेज रफ्तार 10 किमी. की दौड़ के समान होता है।' इस मॉलिक्यूल को नाम दिया गया है-लाके। फिलहाल, इसे लैब में चूहों पर टेस्ट किया जा रहा है, जिनमें टॉक्सिसिटी के कोई चिन्ह दिखाई नहीं दिए हैं। ध्यान देने वाला तथ्य यह है कि लाके ने टॉक्सिंस शरीर से फ्लश आउट कर दिए और इससे उनका हार्ट मजबूत भी हो गया।

बनती रही हैं ऐसी दवाएं

'एक्सरसाइज पिल' का विचार एक दशक से अधिक समय पूर्व से चर्चा में रहा है। अनेक शोधकर्ता उन कंपाउंड्स से प्रयोग कर रहे हैं, जो तीव्र फिजिकल एक्टिविटी के बायोलॉजिकल प्रभावों का मुकाबला कर सकें। लाके एकमात्र पिल नहीं है, जो वर्कआउट के लाभ प्रदान करती है। पिछले साल फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने एसएलयूपीपी-332 नामक कंपाउंड विकसित किया था, जिसने चूहों में मेटाबॉलिज्म और सहनशीलता में इतनी वृद्धि की कि वह पहले की तुलना में लगभग 50 प्रतिशत अधिक दौड़ने लगे। इस अध्ययन के प्रमुख लेखक और फार्मेसी के प्रोफेसर थॉमस बर्रिस के अनुसार, 'यह कंपाउंड बुनियादी तौर पर स्केलटेल मांसपेशियों को बताता है कि वह वही परिवर्तन लाएं, जो स्ट्रेंथ ट्रेनिंग के दौरान देखने को मिलता है।'

'द गार्जियन' के अनुसार सैन डिएगो के सालक इंस्टिट्यूट ने 2008 में जीडब्लू 501516 (संक्षेप में 516) ड्रग विकसित की। यह मुख्य जींस को संकेत भेजती है कि शुगर की जगह फैट को बर्न करे। लेकिन इस ड्रग का एक वैरिएंट धावकों के लिए डोपिंग ड्रग बनकर रह गया। फिर 2015 में कंपाउंड 14 नामक एक अन्य ड्रग विकसित की गई, जिससे यह बात प्रकाश में आई कि यह मोटे चूहों का ग्लूकोज टॉलरेंस बेहतर करके वजन कम कर सकती है। यह सभी प्रयोग चिकित्सा विज्ञान ड्रग्स के उस वर्ग से संबंधित हैं, जिसे 'एक्सरसाइज मिमेटिक्स' कहते हैं, जो आवश्यक रूप से

शरीर में उन अलग-अलग मार्गों को सक्रिय करते हैं, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक्सरसाइज से प्रभावित होते हैं। इन ड्रग्स में क्षमता है कि अल्झाइमर, पार्किंसन और डिमेंशिया को होने से देर तक रोके रखें और मधुमेह, मोटापे की रोकथाम में भी मदद करें।

अक्षम लोगों के लिए होगी वरदान

एक बार जब इस दवा के इंसानों पर ट्रायल पूरे हो जाएंगे तो इनमें से कुछ ड्रग्स को वजन कम करने वाली ड्रग्स के साथ भी दिया जा सकेगा जैसे ओजेंपिक, जो विशेष रूप से बुजुर्गों को सरकोपेनिया की स्थिति में दी जाती है ताकि मांसपेशियों की क्षति को रोका जा सके। अगर इंसानों को एक गोली से एक्सरसाइज के फायदे मिलने लगेंगे, इससे उनकी फिटनेस परफेक्ट हो जाएगी तो यह उन लोगों के लिए चमत्कार होगी, जो फिजिकल एक्टिविटी में हिस्सा नहीं ले पाते हैं, जैसे-बुजुर्ग, शारीरिक रूप से कमजोर, दिव्यांग, जिन्हें मस्कुलर डिस्ट्रॉफी है, जिनकी कोई ऐसी सर्जरी हुई है कि मूवमेंट न कर पा रहे हों या अन्य लोग, जो गंभीर रूप से बीमार हैं।

एक्सरसाइज करना है बेस्ट

बीमार या अक्षम लोगों की बात छोड़ दें तो अन्य स्वस्थ लोगों के लिए यही बेहतर होगा कि वे सुबह देर तक यह सोचकर न सोते रहें कि पलंग पर पड़े हुए गोली खाकर फिट हो जाएंगे। उनके लिए यही उचित होगा कि मैदान में निकलें, वॉकिंग करें, रनिंग करें या मनपसंद एक्सरसाइज करें। इस बात को समझ लेना चाहिए कि फिजिकल एक्सरसाइज का कोई विकल्प नहीं है, उससे न केवल शरीर स्वस्थ बनता है, मन भी प्रसन्न और ऊर्जावान रहता है। *

एक्सरसाइज का शरीर पर रिएक्शन

इस दवा के एक्शन को समझने से पहले यह जानना जरूरी है कि एक्सरसाइज की शरीर पर क्या प्रतिक्रिया होती है और लाके उसकी कैसे नकल करता है? खाली पेट कड़ा वर्कआउट, ब्लड प्लाज्मा के स्तर पर लेक्टेट रसायन में तेजी से वृद्धि कर देता है, इसके बाद बीटा-हाइड्रोक्सीबूटीरेट (बीएचबी) नामक एक अन्य रसायन कीटोन में धीरे-धीरे वृद्धि करता है। कीटोन जिगर में उस समय बनते हैं, जब पर्याप्त ग्लूकोज की अनुपस्थिति में शरीर जिगर में ऊर्जा के लिए फैट को तोड़ता है। ये दोनों रसायन भूख को कम करते हैं। साथ ही हृदय रोगों, टाइप 2 डायबिटीज के खतरों को भी कम करते हैं। इसके अलावा दिमागी फंक्शन को बेहतर करते हुए डिप्रेशन को कम करते हैं। ये सब फायदे केवल डाइट से हासिल नहीं हो सकतीं, क्योंकि जिस मात्रा में लेक्टेट और बीएचबी की जरूरत होती है, उससे अनावश्यक बायप्रोडक्ट्स जैसे नमक और एसिड मिल जाते हैं। कृत्रिम रूप से तैयार लाके से ये रसायन, ओरली मिल जाते हैं, बिना हानिकारक साइड इफेक्ट्स के।

जरूरी नहीं है कि जो व्यक्ति खूब हंसता-मुस्कुराता नजर आए, वो वास्तव में मन से खुश है। उदासी को मुस्कान से ढंकने वाले लोग स्माइलिंग डिप्रेशन के शिकार हो सकते हैं। ऐसे लोगों को घर-परिवार से लेकर वर्कप्लेस तक, सपोर्ट की जरूरत होती है।

मुस्कान से ढंकी उदासी स्माइलिंग डिप्रेशन

लाइफस्टाइल

मोनिका शर्मा

दुःख भी हंसी की ओट ले सकता है। टूटते-बिखरते दिल को थामकर भी सधी सी बातें की जा सकती हैं। उलझनों में घिरकर भी सुखद एहसास लोगों के सामने रखे जा सकते हैं। दरअसल, इंसान का व्यवहार हालात के मुताबिक कई रंग ओढ़ लेता है। कभी इसका कारण अपनों की बेरुखी होती है तो कभी समाज से मिला बेगानापन। ऐसे में कुछ लोग अपने आप तक सिमटने की राह चुन लेते हैं। चुप्पी के तले एक शोर गूंजता है पर सुनाई किसी को नहीं देता। ठहाकों को साथ रखने के बावजूद मन में सब कुछ ठहर गया होता है। यही स्थिति स्माइलिंग डिप्रेशन कही जाती है।

अवास्तविक छवि का आवरण: मौजूदा दौर में हर मोर्चे पर अवास्तविक सी छवि बनाते लोग अवसाद को भी मुस्कुराहटों की परतों तले छिपाने लगे हैं। जीवन की हर छोटी-बड़ी गतिविधि को अपनों-परायों तक पहुंचाते आभासी परिवेश में मुस्कुराते चेहरों के पीछे छिपी मुरझाती मनःस्थिति कोई नहीं देख पाता या यूं कहें कि देखना भी नहीं चाहता। न ही इन परिस्थितियों को जी रहा इंसान स्वयं यह सच किसी को दिखाना चाहता है। विज्ञान की भाषा में स्माइलिंग डिप्रेशन कहा जाने वाला यह व्यवहार अब हर उम्र के लोगों की जीवनशैली का हिस्सा है। हंसता-खिलखिलाता अंदाज पीड़ादाई अनुभूतियों का आवरण बन गया है। अपनों-परायों के सामने ठहाके लगाते बहुत से चेहरे, अपने भीतर सुस्ती, थकान और अकेलेपन से जूझते हुए जीवन बिता रहे हैं। उनका मन-मस्तिष्क नाउम्मीदी और नकारात्मता के घेरे में है। मुरझाता मन और मुस्कुराता चेहरा, बहुत से लोगों के लिए सब कुछ होकर भी कुछ न होने के हालातों को बयान करने वाला बर्ताव है। चिंतनीय है कि अब ऐसे लोगों का आंकड़ा बढ़ रहा है। नकलीपन का आवरण असली भावों को छिपाने लगा है। यही कारण है कि हर ओर दिखती बेहतरी के बावजूद मन से बीमार होते लोगों की संख्या बढ़ी है।

बदल गया परिवेश: सवाल यह है कि मन की टूटन को छिपाने का यह परिवेश आखिर कैसे बन गया? क्यों हर व्यक्ति को यह लगने लगा कि दुःख को बताने-जताने से कहीं अच्छा हंसते-खिलखिलाते हुए लोगों का सामना करना है। किस तरह यह आवरण बड़े-बुजुर्गों की पीड़ा से लेकर बच्चों की मानसिक उलझन तक पर पर्दा डालने का माध्यम बन गया है? क्यों किसी के मन को समझने-जानने की कोशिश नहीं की जाती? जबकि यह अवसाद का ही एक रूप है। ऐसा डिप्रेशन, जिसमें इंसान अपने मन के विषाद को छिपाने के लिए हर जगह, हर हाल में हंसता रहता है। खुशहाल नजर आता है। सार्वजनिक जीवन में जिंदादिल दिखते ऐसे लोग निजी जीवन में अकेलेपन के स्याह साये से जूझते हैं। अध्ययन बताते हैं कि स्माइलिंग डिप्रेशन की समस्या से ग्रस्त व्यक्ति सुखी और संतुष्ट दिखता जरूर है, पर भीतर ही भीतर अवसाद से जूझता है। यही कारण है कि स्माइलिंग डिप्रेशन को हाई फंक्शनिंग डिसऑर्डर भी कहा जाता है। ध्यातव्य है कि हाई-फंक्शनिंग डिसऑर्डर के अंतर्गत ऐसी मानसिक समस्याएं आती हैं, जिनमें व्यक्ति सामान्य दिखने के बावजूद अंदर से बीमार रहता है। एक तरह का क्रॉनिक डिप्रेशन कहे जाने वाले इस डिसऑर्डर का शिकार इंसान आम जीवन को सामान्य ढंग से जीते हुए भावनात्मक रूप से असहजता का अनुभव करता है। खुशमिजाजी के पीछे गहरा खालीपन होता है।

सहयोग-संवेदनाओं की कमी: आज के दौर में बिना लाग-लपेट मन की बात कहने का माहौल, घर हो या बाहर कहीं नहीं दिखता। न दुःख साझा करने का भाव दिखता है और न समझने का। यही कारण है कि लोग चुपचाप अपनी पीड़ाओं से जूझने लगे हैं। हर हाल में सहज दिखते हैं। हर परिस्थिति में प्रसन्नता जाहिर करते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि व्यक्तिगत जीवन में चुना जा रहा यह असामान्य व्यवहार असल में असंवेदनशील होते सामाजिक-पारिवारिक परिवेश का मुखौटा उतारने वाला है। हम अचानक किसी के आत्महत्या जैसा कदम उठा लेने पर चकित तो होते हैं पर समय रहते तकलीफ साझा करने की पहल नहीं करते। दुखद है कि मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालने वाली इन स्थितियों को आज भी गंभीरता से नहीं लिया जाता।

मदद की है दरकार: जरूरी यह है कि वर्किंग प्लेस से लेकर घर-परिवार और आस-पड़ोस तक, स्माइलिंग डिप्रेशन से जूझते लोगों के बर्ताव को समझकर उनका साथ दिया जाए। ऐसी दबी-छुपी समस्याओं को लेकर अब सभी को यह समझना होगा कि कुछ न कहना, सब कुछ कहने जैसा है। जैसे भी संभव हो ऐसे लोगों की मदद की उचित राह तलाशना बेहद आवश्यक है। *

गजल

अवतार सिंह अक्षरजीवी

खुल के बात कर

छुपाने की जरूरत नहीं, खुल के बात कर
पर पूरी शिद्दत से किसी एक से बात कर

अगर मेरा प्यार तुझे मुतमइन नहीं करता
तुझे जिससे खुशी मिले, तू उससे बात कर

मैं मोहब्बत करुंगा पर मेरी शर्तों पर
या तो मुझसे बात कर, या सबसे बात कर

तेरी मुस्कुराहट मेरी मिलकिय्यत है और मैं
नहीं चाहता तू दूसरों से हंस-हंसके बात कर

अपने दिल में पूरी दुनिया को जगह मत दे
गैरों से एक दूरी एक दायरा रखके बात कर

मेरी मोहब्बत के पिंजरे में तालाबंद नहीं है
या तो उड़ जा या फिर अंदर रहके बात कर

कहानी

संजीव जायसवाल 'संजय'

वह अपनी बच्ची को घुमाने के लिए पार्क में जहां भी जाता, गुब्बारे बेचने वाला एक लड़का वहां पहुंच जाता। एक दिन खीझकर उसने गुब्बारे वाले को डपट दिया। इस पर उस लड़के ने जो कहा, वह बेहद शर्मिंदा महसूस करने लगा। मन को छूती एक मार्मिक कहानी।

गुब्बारे वाला

बाबूजी, गुब्बारा ले लीजिए' अचानक वही दुबला-पतला लड़का एक बार फिर सामने आकर खड़ा हो गया।

'मुझे नहीं लेना, चलो भागो यहां से।' मैंने झल्लाते हुए उसे डपट दिया।

'ले लीजए न बाबूजी, देखिए कितने अच्छे गुब्बारे हैं! लाल, हरे, नीले, पीले हर रंग के प्यारे-प्यारे गुब्बारे। बिटिया को बहुत पसंद आएंगे।' उसने जोर देते हुए कहा।

मैं उसे दोबारा डपटने जा ही रहा था कि रचना तुतलाते हुए बोली, 'पापा, जे पीला वाला गुब्बारा बौत अच्छा है.. इछे दिला दीजिए।'

मैं रचना की कोई बात नहीं टालता था। अतः न चाहते हुए भी उसे गुब्बारा दिलवाना पड़ा। वो लड़का एक रुपया लेकर खुशी-खुशी वहां से चला गया।

पिछले महीने पत्नी (दीप्ति) की मौत के बाद रचना की पूरी जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ गई थी। मैं रोज शाम उसे गोद में लेकर पार्क में आ जाता था। पार्क की इस बेंच पर बैठ कर मुझे बहुत शांति मिलती थी क्योंकि दीप्ति की यह पसंदीदा जगह हुआ करती थी। यहां आकर मुझे ऐसा लगता, जैसे वो मेरे साथ बैठी हो। मैं घंटों उसकी याद में खोया रहता।

पिछले कुछ दिनों से इस गुब्बारे वाले के कारण मुझे बहुत कोफ्त होने लगी थी। मैं इस बेंच पर आकर बैठता ही था कि यमदूत की तरह वह आ धमकता। बिना गुब्बारे बेचे टलता ही न था। उसे देखकर ही मुझे उलझन होने लगती थी।

एक दिन तंग आकर मैंने तय कर लिया कि कल से इस बेंच पर बैठूंगा ही नहीं। पार्क में बैठने के लिए मैंने पेड़ों के झुरमुट के पीछे एक दूसरी जगह तलाश ली थी। वहां लोगों की दृष्टि कम ही पड़ती थी, इसलिए वहां काफी शांति थी।

अगले दिन मैं रचना के साथ वहां जाकर बैठ गया। धीरे-धीरे आधा घंटा बीत गया। मैं मन ही मन खुश था कि आज गुब्बारे वाले लड़के ने मेरी शांति भंग नहीं की। तभी वह लड़का भूत जैसा वहां आ टपका, 'अरे, बाबूजी, आप यहां बैठे हैं। मैं समझा कि आज आप आएंगे ही नहीं।' फिर अपने गुब्बारों का झुंड रचना की तरफ बढ़ाते हुए बोला, 'बिटिया रानी, कौन-सा गुब्बारा दूं?'

'अबे, बिटिया रानी के भइया.., तू मुझे चैन से बैठने क्यों नहीं देता? जहां जाता हूं वहां आ धमकता है। क्या तेरे पास और कोई जगह नहीं है?' मैंने उसे बुरी तरह फटकार दिया।

डांट खाकर उस लड़के की आंखें छलछला आईं। वह उन्हें पोंछते हुए बोला, 'बाबूजी, माफ करिएगा, आपको दुख पहुंचाने का मेरा कोई इरादा नहीं था। कुछ दिनों पहले एक दुर्घटना में मेरे माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। मेरे पास स्कूल की फीस भरने के लिए पैसे नहीं हैं। इसीलिए रोज शाम पार्क में गुब्बारे बेचने चला आता हूं। जिनकी गोद में बच्चे होते हैं, वे आसानी से गुब्बारे खरीद लेते हैं। इसीलिए आपके पास आ जाता था।'

इतना कहकर वह लड़का वहां से जाने लगा। मुझे अपने व्यवहार पर बहुत आत्मग्लानि हुई। मेरे दुख से उसका दुख ज्यादा बड़ा था। मैंने उसे आवाज देकर बुलाया और 100 रुपए का नोट उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा, 'इसे रख लो।'

'यह किसलिए?' उस लड़के का स्वर कांप उठा।

'तुम्हारी फीस के काम आएंगे' मैंने उसे समझाने का प्रयास किया।

यह सुनकर उस लड़के की आंखें एक बार फिर छलछला आईं। वह भर्राए स्वर में बोला, 'बाबूजी, मैं बेसहारा जरूर हूं, मगर भिखारी नहीं।'

'मेरा यह मतलब नहीं था, मैं तो सिर्फ तुम्हारी मदद करना चाहता था।' मैंने बात संभालने की कोशिश की।

उस लड़के ने पल भर के लिए मेरी ओर देखा फिर बोला, 'अगर आप मदद करना चाहते हैं तो सिर्फ इतना वादा कीजिए कि फिर कभी किसी गरीब को दुत्कारेंगे नहीं।'

इतना कह कर वह तेजी से वहां से चला गया। मैं चुपचाप बैठा रहा। मेरे अंदर इतना साहस नहीं बचा था कि उसे रोक सकूं। उसके आगे मैं अपने को बहुत छोटा महसूस कर रहा था। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

कारुणिक उजाला फैलाती दियासलाई

इस दुनिया में कई लोग अपने जीवनकाल में ही किंवदंती जैसे बन जाते हैं। वर्ष 2014 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी, ऐसी ही शख्सियत हैं। मध्य प्रदेश के छोटे से शहर विदिशा में जन्म लेने वाले कैलाश शुरू से ही देश, समाज और दुनिया में प्रताड़ना, हिंसा और शोषण के शिकार बच्चों के लिए कुछ करना चाहते थे। इसी मनो-संकल्प का यह परिणाम हुआ कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद भी उन्होंने अपना जीवन बच्चों की सुरक्षा और उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। अपनी पांच दशक से अधिक की इस यात्रा में उन्हें किन-किन पड़ावों से गुजरना पड़ा, व्यक्तिगत-पारिवारिक जीवन में कैसे संघर्ष करने पड़े, किस-किस तरह के आरोप-आक्षेप सहने पड़े, कितनी बार अपने प्राणों को भी संकट में डालना पड़ा, इन तमाम अनुभूतियों और भोगे हुए यथार्थ को उन्होंने अपनी आत्मकथा में संजोया है। हाल में ही उनकी आत्मकथा 'दियासलाई' पुस्तक के रूप में प्रकाशित होकर आई है। इस किताब में ऐसे अनेक प्रसंग मौजूद हैं, जिससे साबित होता है कि कोई साधारण व्यक्ति, केवल अपने विचार, कर्म और महान जीवन उद्देश्य से ही असाधारण बन सकता है।

पुस्तक: दियासलाई (आत्मकथा), **लेखक:** कैलाश सत्यार्थी, **मूल्य:** 599 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

दियासलाई जैसी छोटी सी चीज में भी कितनी संभावना व्याप्त हो सकती है, कैसे वो समाज में करुणा का उजाला प्रसारित कर सकती है, इस आत्मकथा का शीर्षक इसे साबित करता है। अच्छी बात यह है कि इस आत्मकथा में लेखक ने अपनी कमजोरियों को भी सहजता से स्वीकार किया है। कहीं भी खुद को महान या दोषरहित सिद्ध करने की कोशिश नहीं की है। *

रचनाएं आमंत्रित...

हिंदी दैनिक **हरिभूमि** के फीचर पृष्ठों (रविवार भारती, सहेली, बालभूमि और सेहत) में प्रकाशनार्थ आलेख, छोटी कहानियां, कविताएं, व्यंग्य, बाल कथाएं आमंत्रित हैं। लेखकों से अनुरोध है कि अपनी रचनाएं कृतिदेव या यूनिकोड फॉन्ट में हमें ईमेल आईडी haribhoomifeaturedep@gmail.com पर मेल करें।

आजकल वीडियो गेम्स और मोबाइल गेम्स में तमाम ऐसे खेल खूब चाव से खेले जाते हैं, जिनका बेस भूल-भुलैया होता है। सदियों से देश-दुनिया में अनेक ऐसे भूल-भुलैया बनाए जाते रहे हैं, जो रोमांचक अनुभव दिलाने के साथ ही दिमागी वर्जिश भी खूब कराते हैं। यहां बता रहे हैं, दुनिया में प्रसिद्ध भूल-भुलैया कहां हैं, उनकी क्या विशेषता है, इनकी शुरुआत कैसे हुई और इनके प्रकार से जुड़ी रोचक बातें।

मस्ती के साथ कराए दिमागी वर्जिश भूल-भुलैया

एंज्वॉयमेंट / शिखर चंद जैन

आपने लखनऊ के इमामबाड़ा में, किसी फन पार्क या म्यूजियम में या किसी टूरिस्ट प्लेस पर भूल-भुलैया को जरूर एंज्वॉय किया होगा। पत्र-पत्रिकाओं में पजल सॉल्व करने के लिए भी इसका खूब प्रयोग किया होगा। इनकी विशेषताएं और उपयोगिताएं बहुत अनोखी होती हैं।

पौराणिक काल में मिले हैं प्रमाण

13वीं सदी की ग्रीक पौराणिक कथाओं में भी भूल-भुलैया जैसी संरचना और गतिविधियों के प्रमाण मिलते हैं। शुरू-शुरू में इन्हें भ्रमित करने या खेलने के लिए नहीं बल्कि आगंतुकों को आध्यात्मिक यात्रा पर भेजने के लिए बनाया गया था। इसका उद्देश्य उनके मन को शांत करना और आत्मनिरीक्षण करने के लिए था। इसमें एक ही घुमावदार रास्ते का अनुसरण किया जाता था।

बहुत पुराना है कॉन्सेप्ट

सबसे पहले भूल-भुलैया का दर्ज इतिहास, मिस्र में 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व का मिलता है। प्राचीन यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने मिस्र की भूल-भुलैया का दौरा करने का दावा किया और इसे एक घुमावदार इमारत के रूप में वर्णित किया। ये हजारों कमरों से बनी थीं, जिनमें से कई भूमिगत थे और जिनमें मिस्र के राजाओं की कब्रें भी थीं। उन्होंने लिखा कि यूनानियों के सभी काम और इमारतें एक साथ मिलकर भी श्रम और खर्च के मामले में निश्चित रूप से इस भूल-भुलैया से कमतर होंगी। मध्यकाल तक दुनिया के 25 कैथेड्रल चर्च में भी ऐसी संरचनाएं हुआ करती थीं। यूरोप और अमेरिका के प्राचीनतम चित्रों और पेंटिंग्स में भी इनके होने के प्रमाण मिले हैं।

ध्यान के लिए भूल-भुलैया

मनोरंजक गेम के रूप में इस्तेमाल करने के साथ-साथ स्ट्रेस और एंग्जायटी दूर करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। दुनिया में कई जगह भूल-भुलैया का उपयोग वॉकिंग मेडिटेशन के लिए किया जाता है। भूल-भुलैया का उपयोग दुनिया भर में मन को शांत करने, मन को एकाग्र करने, चिंताओं से मुक्ति पाने, जीवन में संतुलन बनाए रखने, रचनात्मकता को बढ़ाने और ध्यान, सेल्फ रिफ्लेक्शन और तनाव को कम करने के लिए किया जाता है।

दो प्रकार के भूल-भुलैया

भूल-भुलैया के दो प्रकार माने जाते हैं। एक है लिबरिंथ और दूसरा हेज। लिबरिंथ अपेक्षाकृत आसान होता है। पर इसकी क्लासिकल डिजाइन इसे विशेष बनाती है, जबकि हेज पारंपरिक भूल-भुलैया है। यह जटिल होने के साथ-साथ इसमें लोगों के खो जाने की भी आशंका होती है। लिबरिंथ भूल-भुलैया एकतरफा होती हैं, जबकि हेज भूल-भुलैया शाखाओं में बंटी होती है। इसीलिए यह कठिन होती है।

दुनिया भर में हैं भूल-भुलैया

भूल-भुलैया का प्रचलन दुनिया भर में है। 90 से ज्यादा देशों में 6400 लिबरिंथ हैं। ब्रिटेन, अमेरिका जैसे देशों में इन से जुड़ी साप्ताहिक गतिविधियां होती हैं। यहां स्थानीय पार्क के अलावा अस्पतालों में भी लिबरिंथ बनाई गई हैं। 16वीं शताब्दी से शुरू होकर, यूरोपीय राजघरानों ने अपनी संपत्ति पर विस्तृत हेज भूल-भुलैया बनाना शुरू कर दिया। भूल-भुलैया का उद्देश्य मनोरंजन करना था, साथ ही गुप्त बैठकों के लिए निजी, दूर-दराज के स्थान प्रदान करना था।

वीडियो गेम्स में भूल-भुलैया

कई शुरुआती वीडियो गेम्स में भी भूल-भुलैया बनाई जाती थी। 1970 के दशक में, पेन-एंड-पेपर भूल-भुलैया वाली किताबें चलन में आ गई थीं। बच्चे और वयस्क समान रूप से अलग-अलग भूल-भुलैया चित्रों के माध्यम से एक रेखा खींचते थे, जितना संभव हो, उतना कम गलत मोड़ लेने की कोशिश करते थे। लगभग उसी समय, शुरुआती वीडियो गेम कंपनियों ने सरल 2D भूल-भुलैया गेम बनाना शुरू कर दिया, जो पेन-एंड-पेपर गेम के समान ही थे, जिसमें भूल-भुलैया या भूल-भुलैया पहेलियों के माध्यम से दौड़ शामिल थी।

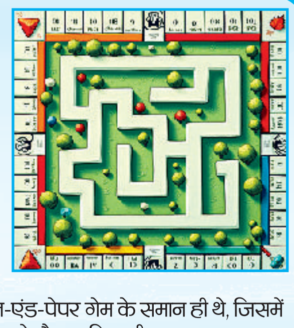

सबसे बड़ा-कठिन भूल-भुलैया

1980 के दशक में, चित्रकार क्रिस्टोफर मैनसन ने घोषणा की थी कि उनकी भूल-भुलैया पुस्तक में पहेली को सुलझाने वाले पहले व्यक्ति को 10,000 डॉलर का पुरस्कार दिया जाएगा। 45 पन्नों की इस सचित्र पुस्तक का शीर्षक है 'भूल-भुलैयाः दुनिया की सबसे चुनौतीपूर्ण पहेली को सुलझाएं।' इसमें पाठकों से एक काल्पनिक घर के केंद्र तक पहुंचने का रास्ता खोजने और रास्ते में पहेलियां सुलझाने को कहा गया था। हालांकि यह काम अपेक्षाकृत सरल लग रहा था, लेकिन पहेलियां बेहद कठिन थीं। पहले विजेता को इसका हल ढूंढ़ने में लगभग दो साल लग गए थे। कुछ वर्ष पहले तक सबसे बड़ा अस्थायी मकई भूल-भुलैया 60 एकड़ में फैला हुआ था। 2014 में, कैलिफोर्निया के डिक्सन स्थित कूल पैच पंपकिंस के आगंतुकों को विशाल, घुमावदार अस्थाई भूल-भुलैया का आनंद लेने का अवसर मिला, जिसके बारे में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने पुष्टि की कि यह अब तक की सबसे बड़ी भूल-भुलैया थी। यह इतना बड़ा था कि कई पर्यटकों ने इसमें खो जाने के बाद अपनी सहायता के लिए हेल्पलाइन नंबरों पर कॉल भी किया।

ये भी हैं दिलचस्प भूल-भुलैया

दुनिया की सबसे बड़ी हेज भूल-भुलैया में लगभग 2.5 मील लंबे रास्ते हैं। डोल प्लांटेशन का विशाल अनानास गार्डन भूल-भुलैया 14,000 उष्णकटिबंधीय पौधों से बनाया गया है। इसे 2008 में दुनिया में सबसे लंबा घोषित किया गया था। 2012 में, कलाकारों ने 250,000 किताबों से एक भूल-भुलैया बनाई। लंदन में पॉप-अप इंस्टॉलेशन 'अमेजमी' नाम से सैकड़ों स्वयंसेवकों द्वारा चार दिनों में बनाया गया था। इसे देखने वालों ने क्लासिक साहित्य का आनंद लिया। ब्राजील के कलाकार मार्कोस सबोया और गुआल्टर पुपो ने इस संरचना को स्पेनिश भाषा के लेखक जेएल बोर्गेस के फिंगरप्रिंट के आकार की नकल करने के लिए डिजाइन किया था। *

अपने कुदरती सौंदर्य के लिए देश के मशहूर हिल स्टेशंस में सिक्किम का अलग ही महत्व है। बीती फरवरी में लेखक ने अपनी सिक्किम यात्रा के दौरान कई बेमिसाल नजारों का दीदार किया। उन अनुभवों को यहां साझा कर रहे हैं अपनी जुबानी।

लाजवाब-मनमोहक सिक्किम के नजारे

यात्रा-अनुभव
समीर चौधरी

मेरा मानना है कि सैर करने वाले मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं। एक, जो बिना किसी योजना के यात्रा करते हैं। वह बिना किसी एजेंडा के ट्रिप पर निकल जाते हैं और प्रतीक्षा करते हैं कि नई लोकेशन और नजारे उनके सामने अपने आप खुलते चले जाएंगे। दूसरे प्रकार के पर्यटकों में इस किस्म का समभाव नहीं होता है। वे अपनी छुट्टियां मनाने के लिए निश्चित कार्यक्रम बनाते हैं और उसी के अनुसार चलने का प्रयास करते हैं। मैं खुद को दूसरी श्रेणी में रखता हूं। लेकिन मेरी यह धारणा हाल में की गई सिक्किम यात्रा के बाद बदल गई।

सिक्किम टूर की प्लानिंगः हालांकि बचपन में मैं कई बार मसूरी जैसे हिल स्टेशन की यात्रा कर चुका हूं। लेकिन उससे आगे का हिमालय क्षेत्र मेरे लिए रहस्य ही रहा है। इस कमी को पूरा करने के लिए मैं हाल ही में एक सप्ताह के लिए सिक्किम की यात्रा पर गया। मैंने अपना कार्यक्रम बनाने में अधिक समय बर्बाद नहीं किया और जल्दी से इस पहाड़ी राज्य की टॉप साइट्स चुन लिया, जहां मुझे जाना था जैसे- नाथूला पास, गुरुडोंगमार झील और युमथांग घाटी।

बर्फीले सौंदर्य को देखने का सपनाः फरवरी में गंगटोक (सिक्किम की राजधानी) में कड़ाके की ठंड पड़ती है। मैं सुबह के समय इस शहर में पहुंचा था। उद्देश्य सिर्फ इसे देखना ही नहीं था बल्कि मैं उम्मीद कर रहा था कि मैं बर्फीली चोटियों के बीच होऊंगा। मैंने इस समय यहां जाने का इसलिए निर्णय लिया था ताकि सिक्किम को उसके जाड़े के पूर्ण वैभव में देख सकूं, यह जानते हुए भी कि कुछ चुनौतियों का अवश्य सामना करना पड़ेगा।

नहीं देख सका कंचनजंगाः जब मैं पहुंचा तो ठंडे गंगटोक ने मेरा स्वागत किया। बादल भरे आसमान में सूरज तो बस दिल को तसल्ली भर दे रहा था। देर शाम तक मेरे मुंह से कार्बन डाइऑक्साइड गहरे जमे धुएं की तरह ऐसे निकल रही थी, जैसे मैं चेन स्मोकिंग कर रहा हूं। सिक्किम की राजधानी में मैंने बाजारों और मठों को देखा, दिन में थोड़ी-थोड़ी देर के लिए रोशनी की किरण दिख जाती थी। मेरे लिए आकर्षण के स्पॉट्स वह थे, जहां से मैं दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी (8,586 मीटर) कंचनजंगा को बिना किसी बाधा के देख सकूं। जब मैं एक ऐसे ही स्पॉट पर पहुंचा तो मेरे गाइड (जो चालक की भूमिका में भी था) ने धुंध की एक मोटी परत की ओर इशारा करते हुए कहा कि जब आसमान साफ होता है तो दूर से ही कंचनजंगा को धूप में नहाते हुए देखा जा सकता है। मैंने धुंध भरे क्षितिज को कई बार अपनी आंखों से भेदने का प्रयास किया, लेकिन अफसोस कि मैं नाकाम रहा, कंचनजंगा नहीं दिखा।

दिखे दिलकश नजारेः अगली सुबह मुझे नाथू ला जाना था। गाइड ने बताया कि भारी बर्फबारी की वजह से सड़क बंद हो गई है। नाथू ला जाने के लिए पर्यटक परमिट लेना पड़ता है। वह अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। मेरी हॉलिडे योजना पर ठंडी बर्फ गिर गई। इससे अगले दिन मुझे बताया गया कि गुरुडोंगमार झील भी नहीं जाया जा सकता। सड़कों पर से बर्फ हटाने में कई दिन लगेंगे। मुझे मेरे मनचाहे नजारों के बजाय केवल सिक्किम के जाड़ों का अहसास मिल रहा था। गाइड के सुझाव पर मैंने उत्तरी सिक्किम में छोटे से टाउन लाचुंग जाने का प्लान बनाया। मेरे गाइड ने कहा, 'जब आप इतनी दूर आ ही गए हैं तो मैं आपको बर्फ दिखाए बिना नहीं जाने दे सकता।' हम एक पतली, नागिन की तरह लहराती पगडंडी पर पहाड़ की तरफ जाने लगे। जल्द ही ढलान पर कोनिफर (शंकुधर वृक्ष) दिखाई देने लगे। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए पेड़ फ्रॉस्ट से मोटे होते चले गए। सड़क के दोनों किनारों पर और पहाड़ों पर कारपेट की तरह बर्फ जम गई थी। पूजा ध्वज फड़फड़ा रहे थे, शांत पुल के नीचे नदी बह रही थी।

अगली दोपहर मेरे होटल की खिड़की के बाहर की दुनिया अचानक धुंधली हो गई। हजारों रूई की गेंदें आसमान में तैर रही थीं। मुझे अपनी किस्मत पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैं होटल के कमरे से बाहर निकल आया। एक सप्ताह की निराशा के बाद मैं स्नोफॉल देख रहा था। हर जगह बर्फ की मोटी परत जम चुकी थी। जब हम गंगटोक लौट रहे थे तो बर्फ के टुकड़े हमारी कार पर गिर रहे थे। गंगटोक से घर लौटने पर मैं सोचने लगा कि जो कार्यक्रम बनाया था, वह तो फेल हो गया, लेकिन जो अनिश्चित-अनपेक्षित देखने को मिला, वह सुंदर और यादगार था। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट
कीर्तिशेखर

जिस तरह एक समय तक अच्छी जॉब-करियर के लिए पढ़ा-लिखा होना जरूरी होता था, आज के दौर में डिजिटल लिटरेसी का करियर ग्रोथ में बहुत ज्यादा महत्व हो गया है। इसकी इंपॉर्टेंस के बारे में जानिए।

करियर ग्रोथ के लिए जरूरी डिजिटल लिटरेसी

आज के दौर में अगर आप डिजिटली लिटरेट नहीं हैं, तो चाहे आपके पास जितनी डिग्रियां हों, चाहे जितने बुद्धिमान हों, करियर में ग्रो करना आपके लिए संभव नहीं होगा। आजकल तो करियर के मामले में लिटरेसी का मतलब ही हो गया है डिजिटल लिटरेसी।

क्या है डिजिटल लिटरेसीः डिजिटल लिटरेसी का मतलब, हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में सहायक विभिन्न तकनीकों के इस्तेमाल में दक्ष होना है। तकनीकी डिवाइसेस को समझना और इन प्लेटफॉर्म्स में काम करना आना भी सही मायने में डिजिटल लिटरेसी का मतलब है।

कई करियर ऑप्शंस तक पहुंचः अगर आप डिजिटल स्किल्स में माहिर हैं, तो आपके सामने विभिन्न तरह के करियर ऑप्शंस हर समय मौजूद रहेंगे। आप ज्यादा से ज्यादा विकल्पों तक आसानी से पहुंच सकते हैं। मसलन, डिजिटल मार्केटिंग, डेटा एनालिटिक्स प्रोग्रामिंग, ग्राफिक डिजाइन या कंटेंट क्रिएशन जैसे क्षेत्रों में आपके लिए भरपूर अवसर उपलब्ध रहेंगे। यही नहीं अगर आप वर्क फ्रॉम होम और गिग इकोनॉमिक्स से जुड़े हैं तो भी आपके लिए डिजिटल स्किल्स का होना बहुत जरूरी है।

बढ़ती है प्रोडक्टिविटीः अगर आप डिजिटली लिटरेट हैं तो विभिन्न तरह के डिजिटल टूल्स जैसे एक्सेल, सीआरएम सॉफ्टवेयर और गूगल वर्क स्पेस का इस्तेमाल करके अपने काम में तेजी और क्वालिटी ला सकते हैं। समय बचाने वाले उपकरण और सॉफ्टवेयर का सही उपयोग आपको कॉम्पिटिशन में आगे रखेगा और अगर आप डिजिटली एफिशिएंट नहीं हैं तो चाहे जितने पढ़े-लिखे हों और चाहे जितने इंटेलीजेंट हों, आपकी प्रोडक्टीविटी और एफिशिएंसी दोनों ही पीछे रह जाएंगी। टाइम सेविंग उपकरण और सॉफ्टवेयर का सही उपयोग आपको प्रतिस्पर्धा में आगे रखता है।

जॉब सर्च-नेटवर्किंग में सुविधाः अगर आप डिजिटल लिटरेट हैं तो लिंक्ड इन, ग्लास डोर और दूसरे जॉब प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करके अपने लिए बेहतर से बेहतर जॉब्स खोज सकते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के जरिए आप अपने क्षेत्र विशेष के लोगों से जुड़कर अपने लिए नए-नए अवसर पैदा कर सकते हैं। साथ ही नवीनतम ट्रेंड्स और टेक्नोलॉजी से परिचित होने के कारण न सिर्फ आपका परफॉर्मेंस अपग्रेड रहता है बल्कि लोगों के बीच इज्जत भी ज्यादा मिलती है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, ब्लॉक चेन और अन्य एडवांस टेक्नोलॉजी में काम करने के लिए यह बेसिक स्किल बहुत जरूरी है।

सेल्फ एंप्लॉयमेंट में हेल्पफुलः अगर आप अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए वेबसाइट का उपयोग करना चाहते हैं, सोशल मीडिया मार्केटिंग का हिस्सा बनना चाहते हैं और ऑनलाइन पेमेंट पाने के लिए, पेमेंट गेटवे बनवाना चाहते हैं, तो आपको डिजिटली लिटरेट होना बहुत जरूरी है। आजकल ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर अपने प्रोडक्ट्स बेचना भी तभी संभव है, जब आप डिजिटली एक्सपर्ट होंगे।

अगर पीछे रह गए तोः अगर इतनी जरूरत साबित होने के बाद भी आप डिजिटल इलिटरेट रह जाते हैं तो इसका आपको अपने करियर में कई तरह से नुकसान उठाने पड़ सकते हैं। मसलन, डिजिटल स्किल्स न होने पर आपको जॉब से बाहर कर दिया जा सकता है। विशेषकर मार्केटिंग फाइनेंस के फील्ड में। डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल न करने पर अपने सहकर्मियों से परफॉर्मेंस में बहुत ज्यादा पिछड़ सकते हैं। डिजिटल लिटरेसी की कमी के कारण आपको अच्छी सैलरी वाली जॉब नहीं मिल सकती। खासकर जिन जॉब्स में आटोमेशन और टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल बहुत ज्यादा बढ़ गया है, वहां तो आपका टिकना भी मुश्किल हो सकता है। डिजिटल लिटरेसी न होने पर आपके साथ कई तरह के ऑनलाइन फ्रॉड कभी भी हो सकते हैं। *

ऐसे सुधारें डिजिटल लिटरेसी

कई तरह के उपलब्ध ऑनलाइन कोर्सेस मसलन यूडेमी, स्किल्स शेयर और कोरसेरा जैसे प्लेटफॉर्म्स का फायदा उठाएं। बेसिक कंप्यूटर स्किल्स से लेकर एडवांस टूल्स तक सब कुछ सीख सकते हैं, बशर्ते कोशिश करें। माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के विभिन्न सॉफ्टवेयर जैसे वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट और गूगल वर्क स्पेस और वीडियो कांफ्रेंसिंग एप जैसे जूम, एमएस स्ट्रीम का अभ्यास करें। इसी तरह फेसबुक, इंस्टाग्राम और लिंक्ड इन जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग करें और एसईओ, पीपीसी और कंटेंट मार्केटिंग जैसे टूल्स सीखें। इसके अलावा साइबर सुरक्षा की समझ बढ़ाएं और रियल लाइफ में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल लाइफ की प्रैक्टिस करें। मसलन, ऑनलाइन बिल पेमेंट करें, डिजिटल कैलेंडर का इस्तेमाल करें और ई-कॉमर्स साइट्स पर शॉपिंग करें। इन गतिविधियों से आप डिजिटली लिटरेट हो जाएंगे।

सिने-ट्रेंड
हेमंत पाल

शुरुआती दौर से ही बॉलीवुड में प्रेम आधारित कितनी ही फिल्में बनीं और जबर्दस्त सफल हुईं। लेकिन बीते कुछ वर्षों में ऐसी कई फिल्में भी खूब हिट हुईं, जिनमें प्यार का एंगल न के बराबर था, तो क्या मान लिया जाए कि लव-बेस्ड फिल्मों का जादू कम होने लगा है?

कम हो रहा लव-बेस्ड फिल्मों का जादू !

मोहब्बत की यादगार दास्तान 'मुगल-ए-आजम'

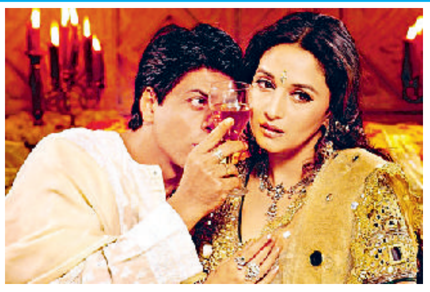

एक ट्रैजिक प्रेम कहानी 'देवदास'

प्रेम जीवन का ऐसा कोमल अहसास है, जिसे कहीं से भी मोड़कर उसे कथानक का रूप दिया जा सकता है। हिंदी फिल्मों की बात करें तो कई दशकों तक प्रेम, फिल्मों के लिए सबसे मुफीद विषय रहा। अब तक जितनी भी फिल्में बनीं, उनमें सबसे ज्यादा फिल्मों के विषय प्यार-मोहब्बत के इर्द-गिर्द ही घूमते रहे हैं।

फिल्मों में जरूरी तत्व रहा प्रेमः शुरुआती ब्लैक एंड व्हाइट के दौर से रंगीन फिल्मों तक में जो बात हर दौर में कॉमन रही, वो है-प्रेम कहानियां। फिल्मों की कहानी का आधार चाहे एक्शन हो, सामाजिक हो, कॉमेडी या फिर हॉरर, हर कहानी में कोई न कोई लव स्टोरी जरूर होती रही। देखा जाए तो अन्य विषयों पर बनी फिल्मों में भी कथानक को आगे बढ़ाने में प्रेम का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

लंबी है प्रेमाधारित फिल्मों की फेहरिस्तः हिंदी सिनेमा में अमर प्रेम कथाओं की फेहरिस्त काफी लंबी है। 'मुगले आजम', 'आवारा', 'कागज के फूल', 'प्यासा', 'साहिब बीवी और गुलाम', 'पाकीजा', 'कश्मीर की कली', 'आराधना', 'बॉबी', 'सिलसिला', 'देवदास', 'मैंने प्यार किया', 'कयामत से कयामत तक', 'एक दूजे के लिए', 'दिल है कि मानता नहीं', 'लव स्टोरी', 'साजन', 'दिल', 'उमराव जान', '1942 ए लव स्टोरी', 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे', 'कुछ-कुछ होता है', 'रंगीला', 'कल हो न हो', 'जब वी मेट', ऐसी कितनी ही फिल्मों में प्रेम को प्रमुखता से दर्शाया गया है।

नए दौर की फिल्मी लव स्टोरीजः समय बदलने के साथ जैसे युवाओं की सोच बदली, उनके प्यार करने का तरीका भी बदला। इसे भी फिल्मी पर्दे पर बखूबी दर्शाया गया। नई पीढ़ी के प्रेम के रंग-ढंग को दर्शाती फिल्मों में 'रहना है तेरे दिल में', 'बचना ए हसीनों', 'सलाम नमस्ते', 'लव आजकल', 'ये जवानी है दीवानी', 'वेकअप सिड', 'अजब प्रेम की गजब कहानी', 'रॉक स्टार', 'बर्फी', 'टू स्टेट्स', 'आशिकी-टू', 'कॉकटेल', 'शुद्ध देसी रोमांस', 'तनु वेड्स मनु', 'मसान', 'तमाशा', 'ऐ दिल है मुश्किल', 'बरेली की बर्फी' जैसी अनेक फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है।

दर्शकों को खूब आए पसंद 'बजरंगी भाईजान'

दर्शकों को पसंद आता प्यार का अहसासः फिल्मों का कथानक कितना भी नयापन लिए हो, उसका मोहब्बत से दूर-दूर तक वास्ता न हो, फिर भी उसमें एक प्रेम कहानी जरूर पनपती है। क्योंकि प्रेम जीवन की वो शाश्वत सच्चाई है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। भारतीय दर्शक के जीवन में मोहब्बत के अलग ही मायने हैं और इन्हीं भावनाओं को वो हर पल जीता है। उसे 'मुगले आजम' की सलीम और अनारकली का इश्क कामयाब न होना उतना ही सालता है, जितना 'सदमा' में श्रीदेवी और कमल हासन का बिछड़ना! दरअसल, सामान्य जिंदगी में भी प्रेम कथाओं की कमी नहीं होती, पर दर्शक फिल्मों के जरिए अपनी मोहब्बत के अधूरे सपनों को जीता है। फिल्म बनाने वालों ने भी दर्शकों की इस कमजोरी को अच्छी तरह समझ लिया। फिल्मों के हर कथानक में एक लव स्टोरी इसलिए ही होती है। लेकिन लगता है अब धीरे-धीरे ये फार्मूला भी दरकने लगा। क्योंकि, नई पीढ़ी को ऐसी प्रेम कथाएं रास नहीं आती।

एयर होस्टेस के कर्तव्य की कहानी 'नीरजा'

बदल रहे फिल्मों के विषयः लव स्टोरी बेस्ड फिल्मों के शानदार अतीत के बावजूद बीते कुछ सालों में आई कई फिल्मों के कथानकों में प्रेम नदारद था या न के बराबर था। यदि किसी फिल्म में प्रेम-प्रसंग था भी, तो महज कहानी को आगे बढ़ाने के लिए थे। 'बजरंगी भाईजान', 'सुल्तान', 'दंगल', 'रुस्तम', 'नीरजा', 'पिंक', 'कहानी', 'एयरलिफ्ट', 'निल बटे सन्नाटा', 'उड़ता पंजाब', 'एम.एस. धोनी' से लेकर 'काबिल' और 'जॉली एलएलबी-2' तक में प्रेम का एंगल न के बराबर रहा। रहा भी तो महज कथानक को आगे बढ़ाने के लिए। सलमान खान की 'बजरंगी भाईजान' और 'सुल्तान' दोनों ही फिल्मों में नायक-नायिका के बीच प्रेम तो दिखाया गया है, लेकिन ये फिल्में कहीं से भी प्रेम-कहानी नहीं है। अक्षय कुमार की 'रुस्तम' की कहानी का आधार कोर्ट केस ही रहता है। सोनम कपूर की फिल्म 'नीरजा' तो पूरी तरह एक एयर होस्टेस के कर्तव्य की कहानी है। वास्तव में प्रेम कहानी को हाशिए पर रखकर फिल्मों में कुछ नया, कुछ अलग दिखाने का ये ट्रेंड धीरे-धीरे आया और सफल भी हुआ। तो क्या ये मान लिया जाए कि हिंदी फिल्मों में मोहब्बत के कॉन्सेप्ट को लेकर दर्शकों में क्रेज नहीं रहा! ऐसी लवस्टोरीज हाशिए पर जा रही हैं! *